ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

मार्गशीर्ष २०८० दिसम्बर २०२३

विद्यार्थी दिवस

₹ ३०

बालिका वैज्ञानिक : गीतांजलि राव

कविता

बड़ा सताये ठंडी का मौसम

– हरेन्द्र श्रीवास्तव

सुबह–शाम छाया है कुहरा,
दिन छोटे रात हो रही बड़ी।
बड़ा सताये ठंडी का मौसम,
नहीं मिल रही है धूप कड़ी।।

सन–सन बह रही शीत लहर,
पाला पड़ गया है सारे गाँव।
बड़ा सताये ठंडी का मौसम,
नहीं सुहाती है पेड़ों की छाँव।।

सूने पड़ गए खेत–खलिहान,
जाने कहाँ खो गयी चिड़िया।
बड़ा सताये ठंडी का मौसम,
नहीं दिखती अब गिलहरियाँ।।

थर–थर काँप रहा तन बदन,
सारा दिन सोते तान रजाई।
बड़ा सताये ठंडी का मौसम,
कैसे हो अब पढ़ाई–लिखाई।।

बाग–बगीचों में जमी है ओस,
मौसम अब नहीं रहा सुहाना।
बड़ा सताये ठंडी का मौसम,
नहीं भाता अब नदी नहाना।।

हाथ–पाँव सब पड़ गये हैं सुन्न,
लगने लगी अब जोरों की ठंड।
बड़ा सताये ठंडी का मौसम,
खेल–कूद सारे हो गये हैं बंद।।

अंदर भी ठंडी बाहर भी ठंड,
कैसे खेलें कैसे पढ़ें हम सब।
कब जायेगा ठंडी का मौसम,
बड़ा सताये ठंडी का मौसम।

– प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

मार्गशीर्ष २०८० ▪ वर्ष ४४
दिसम्बर २०२३ ▪ अंक ०६

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

इस बार विद्यार्थी दिवस (३ दिसम्बर) पर हम बात करेंगे एक ऐसी विद्यार्थी बहिन की जिसने मात्र १५ वर्ष की अवस्था में ही अपनी प्रतिभा और लगन से विश्व की बहुचर्चित पत्रिका 'टाईम' के आवरण पृष्ठ पर स्थान पाया और यह पहली बार है जब इस अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की पत्रिका ने किसी बच्ची का चित्र आवरण पर प्रकाशित किया है।

आप जानने को उत्सुक होंगे कि यह कौन है? और उसने ऐसा क्या किया कि उसकी चर्चा हो रही है?

बच्चो! यह है भारतीय मूल कि अमेरिकावासी, अवस्था में छोटी पर काम में बड़ी बालिका वैज्ञानिक **गीतांजलि राव**। गीतांजलि को जब वह मात्र ४ वर्ष की थी तब उसके चाचा ने एक 'विज्ञान किट' उपहार में दी थी यहीं से उसका विज्ञान के प्रति आकर्षण बढ़ता गया और १० वर्ष की होते–होते उसका ध्यान अपने क्षेत्र के 'क्लिंट जल संकट' पर ऐसा केन्द्रित हुआ कि उसने पानी में सीसे की मात्रा जाँचने का सरल उपकरण बनाने की ठान ली। उसने ३ एम के एक शोध वैज्ञानिक के सहयोग में काम करना आरंभ किया। लगन रंग लाई और वह २०१७ में 'डिस्कवरी एजुकेशन ३ एम' की 'यंग साइंटिस्ट' की उपाधि से सम्मानित हुई। २५०० डॉलर की सम्मान निधि भी मिली।

केवल यही नहीं तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) का उपयोग कर 'सायबर बुलिंग' का पता लगाने वाला 'काइण्डली' नामक एप भी बना लिया।

वर्ष २०२० में टाईम पत्रिका के 'किड ऑफ ईयर' के रूप में नामित ५००० प्रतिभागियों में चयनित हुई। अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर अमेरिका के व्हाइट हाऊस में 'गर्ल्स लीडिंग समारोह' में इसे सम्मानित किया गया।

बच्चो! ऐसे उदाहरण बताते हैं कि ठान लो तो क्या नहीं हो सकता है। विद्यार्थी जीवन अपार संभावनाओं का उद्गम स्थल है। सही दिशा और सच्ची लगन हो तो विद्यार्थी स्वयं के ही नहीं अपने समाज के लिए भी वरदान सिद्ध हो सकते हैं।

इतनी प्रसिद्धि और उपलब्धि से यही सिद्ध कर सकी है यह छोटी–सी वैज्ञानिक गीतांजलि। हमें प्रसन्नता है क्योंकि वह एक तो आप जैसी छोटी–सी बच्ची है दूसरे भारतीय मूल की है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- परिश्रम का पुरस्कार -डॉ. के. रानी ०५
- सड़कों की पगडण्डियाँ -शीला पाण्डे १७
- महावीरों से बड़े वे बालवीर -गोपाल माहेश्वरी २६
- परिवर्तन -मधु गोयल ३४
- ज्यामितीय पोशाख -सुधा दुबे ४४

छोटी कहानी

- उबुंतु -शिखरचन्द जैन ०८
- संकल्प -डॉ. सतीशचन्द्र 'भगत' ३८
- चिप्स की कीमत -उषा सोमानी ४२

बौद्धिक क्रीडा

- बूझो तो जाने -राजेश गुजर १३
- अंक चित्र बनाओ -राजेश गुजर १४
- रंग भरो -चाँद मोहम्मद घोसी ३२
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी ४०
- रेखा गणित पहेलियाँ -गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ४१

चित्रकथा

- जल का सूत्र -देवांशु वत्स २९
- नमूना -संकेत गोस्वामी ३७
- अनोखी माँग -देवांशु वत्स ४७

कविता

- बड़ा सताए ठंडी का मौसम -हरेन्द्र श्रीवास्तव ०२
- यों मत देर लगाओ -यशपाल शर्मा 'यशस्वी' १६

स्तंभ

- शिशु गीत -कल्याण कुमार जैन 'शशि' ०७
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ०९
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १०
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी २२
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी २३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २४
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३०
- पुस्तक परिचय - ३३
- छः अँगुल मुस्कान - ३६
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३९
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ४६
- आपकी पाती - ५०
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

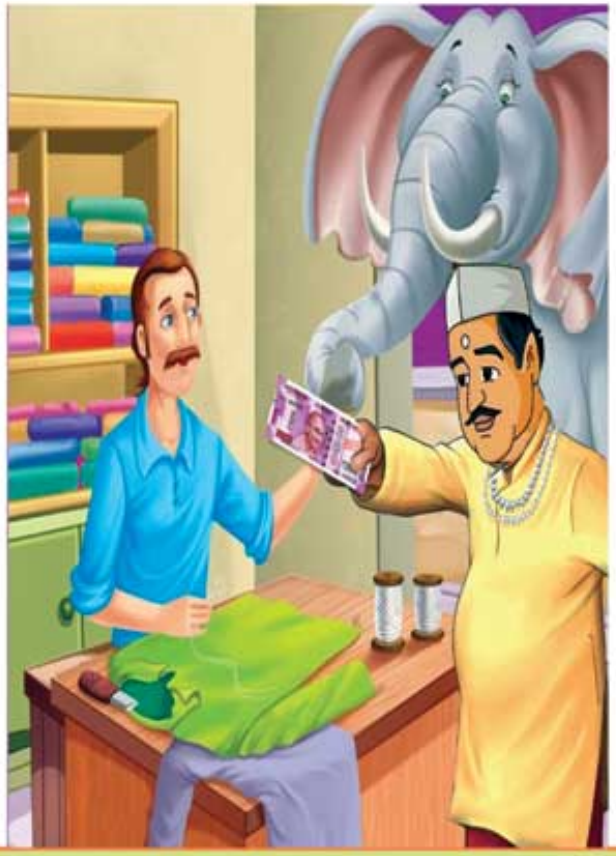

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

परिश्रम का पुरस्कार

– डॉ. के. रानी

दस वर्षीय दीनू दोपहर में शाला से घर आया। उसने बस्ता एक ओर सरकाया। माँ ने आते ही उसके लिए खाना लगा दिया था। उसने जल्दी–जल्दी भोजन किया और तुरंत अपने कमरे में आकर लैपटॉप खोलकर बैठ गया।

''दीनू! क्या कर रहे हो?''

''माँ! मैं लैपटॉप पर अपनी पसंद का गेम खेल रहा हूँ।''

''कुछ देर आकर मेरे साथ बैठो। बताओ तो सही तुम्हारी शाला में आज क्या हुआ है?''

''माँ! बताने वाली बात होती तो पहले ही बता देता। कृपया मुझे परेशान मत करो। थोड़ी देर में आप मुझे पढ़ने के लिए बैठा देंगी। मुझे कुछ देर खेलने दीजिए।'' कहकर वह फिर से लैपटॉप पर व्यस्त हो गया।

प्रिया को समझ नहीं आ रहा था कि दीनू को कैसे समझाए? पिछले दो वर्ष वह कोरोना महामारी के कारण शाला नहीं जा पाया था। उस समय शाला की पढ़ाई ऑनलाइन लैपटॉप के माध्यम से ही हो रही थी। तब से उसे लैपटॉप की ऐसी आदत लगी कि वह शाला के अलावा हर समय उसी पर लगा रहता। वह उसे बड़ी कठिनाई से गृहकार्य करवाती। थोड़ी देर पढ़ने से वह खीज जाता और माँ से शिकायत करता।

ऑनलाइन पढ़ाई के कारण उसके लिखने की आदत बिल्कुल छूट गई थी। वह लिखने में जरा भी रुचि न लेता। पढ़ने में वह होशियार था। हर पाठ का

मौखिक उत्तर तुरंत दे देता लेकिन जब लिखने की बारी आती तो उसका मूड खराब हो जाता।

''माँ! आप हर समय मुझे लिखने को क्यों कहती हो? आपको पता है मुझको सारा पाठ याद है। मैंने गृहकार्य भी कर लिया है। शाला में दीदी जो पूछेंगी मैं उसका उत्तर दे दूँगा।''

''दीनू! अभ्यास से हमारे लिखने में सुधार आता है। बेटा! इससे हमारी छोटी-छोटी त्रुटियाँ दूर हो जाती हैं। पता नहीं तुम लिखने के नाम से इतना क्यों कतराते हो?''

''माँ! मुझे लिखना अच्छा नहीं लगता। आपको पता है मैं लैपटॉप पर कितना अच्छा टाइप कर लेता हूँ।''

''लेकिन परीक्षा में प्रश्न के उत्तर कॉपी पर ही लिख कर देने होंगे। वहाँ तुम्हारा यह लैपटॉप काम नहीं करेगा।'' प्रिया बोली। दीनू फिर भी लिखने के लिए राजी नहीं हुआ। यही बात प्रिया को परेशान किए रहती कि वह उसे लिखने के लिए कैसे मनाएँ?

दिसम्बर का महीना था। उनके छः माही परीक्षा शुरू होने वाली थी। प्रिया ने दीनू को स्मरण कराया- ''दीनू! तुम्हारी लिखावट बहुत ही खराब है और तुम ठीक से लिख भी नहीं पाते हो। प्रश्न के उत्तर लिखने में बहुत सारी छोटी-छोटी गलतियाँ करते हो। मेरे सामने बैठो। मैं तुम्हें लिखने का अभ्यास करवा दूँगी।''

''कृपया माँ! आपको जो पूछना है वह अभी पूछ लीजिए। अभी मैं लिखने के लिए तैयार नहीं हूँ। आप बार-बार मुझे यही कहकर परेशान करती हैं। मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मुझे सारे पाठ याद हैं। यह बात मैं आपको कई बार बता चुका हूँ फिर भी आप मेरे पीछे पड़ी रहती हैं।'' दीनू नाराज होकर बोला और अपने कमरे में आकर बैठ गया।

प्रिया को समझ नहीं आ रहा था वह क्या करें। उसकी बात दीनू की समझ में नहीं आती। कुछ दिन पहले आचार्य शिक्षक सम्मेलन पर शिक्षिका ने उन्हें यही बात कही थी।

''दीनू का दिमाग बहुत तेज है लेकिन यह लिखने का अभ्यास नहीं करता। जिसके कारण से इसके अंक कम आते हैं। आप उसके साथ घर पर भी थोड़ा परिश्रम किया कीजिए।''

''दीदी! मैं बहुत प्रयत्न करती हूँ लेकिन वह लिखने को राजी नहीं होता। दो वर्ष से उसके लिखने का अभ्यास ही छूट गया। मेरी समझ में भी नहीं आता उसे इस काम के लिए कैसे तैयार करूँ?''

उसी दिन से प्रिया उसे बार-बार लिखने के लिए कह रही थी। हर बार वह रूठ कर चला जाता। परीक्षा प्रारम्भ हुई। दीनू ने अपनी ओर से बहुत अच्छे उत्तर दिए थे। परिणाम आया तो उसका मुँह लटका हुआ था। उसका मित्र मणि कक्षा में सबसे अच्छे अंक लेकर आया था। प्रिया ने पूछा- ''दीनू! तुम्हारी कक्षा में प्रथम कौन आया है?''

''मणि आया है।''

''तुम तो कहते थे मैं कक्षा में सबसे होशियार हूँ।''

''मैंने कोई झूठ नहीं कहा। कक्षा में सबसे होशियार मैं हूँ।

''मैंने कोई झूठ नहीं कहा। कक्षा में सबसे होशियार मैं हूँ। पता नहीं मेरे अंक क्यों कम आए! कल दीदी ने आपको शाला में बुलाया है।'' वह बोला।

उसका उतरा चेहरा देखकर प्रिया ने इस समय उसे कुछ कहना ठीक नहीं समझा। वह जानती थी कल शाला जाकर सारा चित्र अपने आप साफ हो जाएगा। प्रिया को देखकर दीदी बोली- ''मैंने आपको पहले भी चेतावनी दी थी कि आप इसके साथ घर पर परिश्रम किया करें लेकिन इसकी कॉपी में ऐसा कुछ दिखाई नहीं दे रहा।''

''दीदी! अच्छा होगा आप इस समय दीनू को भी यहाँ बुला ले। वह मेरी बात नहीं सुनता।''

प्रिया की कहने पर दीदी ने दीनू को बुला लिया। उसकी कॉपी खोलकर वे बोली– ''दीनू! तुम स्वयं पढ़कर सुनाओ तुमने क्या लिखा है?''

कॉपी में लगे लाल निशान देखकर वह समझ गया उसने लिखने में बहुत गलतियाँ की है। वह सिर झुका कर खड़ा हो गया।

''क्या बात है अपनी लिखे शब्द पढ़ने में परेशानी आ रही है? केवल होशियार होने से कुछ नहीं होता। प्रश्नों के उत्तर देने के लिए लिखने की आवश्यकता पड़ती है। यदि हमने शब्द ठीक से नहीं समझे तो लिखेंगे कैसे? कुछ शब्द बोलने और सुनने में एक जैसे लगते हैं लेकिन लिखने में अलग होते हैं। तुमने उन्हीं में अधिक गलती की है।''

''आप ही बताइए यह अपनी गलतियाँ कैसे सुधार सकता है?'' प्रिया बोली।

''दीनू! यदि तुम कक्षा में अच्छा स्तर पाना चाहते हो तो तुम्हें लिखने का अभ्यास करना होगा। इससे ही तुम्हारी गलतियाँ दूर होंगी और तुम्हारी लिखावट में भी सुधार होगा।''

इतना कहकर उन्होंने मणि की कॉपी उसे दिखाई। उसने हर शब्द को साफ–साफ लिखा हुआ था। उसके सामने उसकी लिखावट बहुत खराब दिख रही थी। आज पहली बार उसे अपनी गलती पर पछतावा हो रहा था। दीदी! थोड़ी देर तक उसे समझाकर कक्षा में भेज दिया। उसके बाद प्रिया भी घर चली आई। छुट्टी होने पर दीनू घर आया तो आज प्रिया ने उसे कुछ नहीं कहा। खाना खाने के बाद वह कॉपी–किताब और पेन लेकर मेज पर आ गया और बोला ''माँ! आप ठीक कहती हैं मुझे लिखने का अभ्यास करना चहिए। कृपया मेरी सहायता कर दो।''

प्रिया को सहसा अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह तुरंत उसके साथ बैठ गई और उसे एक–एक शब्द का अर्थ समझा कर पढ़ाने लगी। दीनू कठिन शब्दों को लिखकर उनका अभ्यास करने लगा। बहुत जल्दी उसने अपनी गलती सुधार ली। उसके बाद फिर कभी उसने दीदी और माँ दोनों को शिकायत का अवसर नहीं दिया। कक्षा में भी उसने अपना प्रथम स्थान बना लिया था। अब मणि के साथ उसकी लगातार स्पर्धा चलती रहती। लगातार परिश्रम और कठिन अभ्यास के कारण अब उससे हमेशा आगे निकल जाता। परिश्रम का पुरस्कार पाकर वह स्वयं भी बहुत आनंदित था।

– चुक्खूवाला (उत्तराखंड)

शिशु गीत

बिना टिकट खरगोश

– कल्याण कुमार जैन 'शशि'

फर्स्टक्लास में सफर कर रहे,
बिना टिकट खरगोश।
टी टी को आता देखा तो,
हवा हो गए होश।।

पड़ा बड़ा जुर्माना लेकिन,
चुका न पाए पाई।
हाथों में हथकड़ियाँ पहनी,
हवा जेल की खाई।।

उबुंतु

– शिखरचंद जैन

''नमस्ते सोनल! मैं रोहित बोल रहा हूँ। तुमसे सहायता चाहिए थी।''

''हाँ हाँ! बोलो रोहित! तुम्हारा नंबर मेरे मोबाइल में सेव किया हुआ है। तुम्हारी आवाज इतनी दबी हुई और कमजोर–सी कैसे है? बहुत दिनों से तुम कक्षा में भी नहीं आ रहे हो?''

सोनल ने एक साथ कई प्रश्न कर डाले।

रोहित ने कहा– ''मुझे इनफ्लुएंजा हो गया था। १५ दिनों से बीमार था। कल पता चला कि १५ दिनों बाद ही अंतिम परीक्षा होने वाली हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे १५ दिनों की पढ़ाई का अपडेट दे देती। साथ ही अपने सारे नोट्स भी दे देती तो मैं कुछ तैयारी कर लेता। शाला आने लायक ऊर्जा तो अब भी नहीं है मेरे अंदर। प्रधानाचार्य जी को छुट्टी का आवेदन देकर उनसे सीधे परीक्षा में बैठने की अनुमति लूँगा। १–२ मित्रों को फोन किया था किन्तु उन्होंने कोई सकारात्मक उत्तर नहीं दिया है। कृपया मेरी सहायता करो।''

पल भर के लिए सोनल के मन में भी आया कि वह रोहित को मना कर दे। रोहित और उसके बीच काँटे की टक्कर चलती थी। इसलिए उसे लगा कि यह सुनहरा अवसर है जब उसे आसानी से पछाड़ा जा सकता है। लेकिन वह अच्छे स्वभाव की लड़की थी। कुछ सोचकर उसने कहा– ''ठीक है, मुझे आज का समय दो। मैं कुछ करती हूँ।''

फोन कटने के बाद सोनल ने कुछ देर सोच–विचार किया। अपने सारे के सारे नोट्स देना भी उसे ठीक न लगा क्योंकि इससे परीक्षा में उसके और रोहित के उत्तर में समानता आ सकती थी।

फिर उसने अपने ७८ क्लासमेट्स को फोन लगाया। उन्हें शाम ठीक ४.०० बजे शाला लाइब्रेरी के सामने आने को कहा।

सभी विद्यार्थी समय पर एकत्रित हो गए। सोनल ने सब को रोहित की बीमारी के बारे में बताते हुए कहा– ''हम एक समूह बना रहे हैं– उबुंतु! यह समूह रोहित की सहायता करेगा। परीक्षा का समय है इसलिए कोई एक छात्र उसे ना सारे नोट्स देना चाहेगा, न इतना समय दे पाएगा कि वह १५ दिन की सारी बातें उसे ठीक से बता सके।''

सबने सोनल की बात से सहमति जताई। किन्तु दीपिका से रहा न गया। उसने कहा– ''बाकी सब ठीक है। किन्तु समूह का यह कैसा नाम है उबुंतु?''

दूसरे विद्यार्थियों के चेहरों व हाव–भाव से भी लग रहा था कि उनके मन में भी यही उत्सुकता थी।

सोनल ने कहा– ''उबुंतु दरअसल अफ्रीकी दर्शन है। इसमें इंसानों में परस्पर सहयोग, सामंजस्य, टीमवर्क यानी समूह भावना, प्रेम, स्नेह, मानवता, आदर और सहानुभूति की बात कही गई है।

इसके पीछे सोच यह है कि हम जो भी हैं सबकी वजह से हैं। इसलिए हमको सबको साथ लेकर चलना चाहिए। आज रोहित के साथ ऐसी परेशानी आई है कल को हम में से भी किसी के साथ ऐसा हो सकता है। मैंने इस दर्शन के बारे में एक किताब में पढ़ा था तो सोचा क्यों ना इसे आज से ही लागू कर दें। हमारी समूह धीरे-धीरे बड़ा रूप लेकर आगे परीक्षा के बाद और भी अच्छे काम कर सकती है।''

सोनल की बात से सभी विद्यार्थी उत्साहित हो गए और पूरी तरह से साथ देने तैयार हो गए। विचार विमर्श के बाद योजना बनी की हर विषय के नोट्स एक-एक करके समूह के अलग-अलग सदस्य रोहित को एक दिन के लिए देंगे ताकि वह चाहे तो आवश्यक चीजें नोट कर ले या फिर उनकी फोटो कॉपी करवा ले। इससे एक ही छात्र के सारे नोट्स भी रोहित को नहीं मिलेंगे और परीक्षा में उत्तरों में समानता भी कम रहेगी। रही बात उसे १५ दिनों की विषय अनुसार फीडबैक देने की, तो ८ लोगों का समूह का प्रत्येक सदस्य उसके घर एक डेढ़ घंटे के लिए एक-एक करके जाएगा और उसे ब्रीफिंग दे देगा।

योजना बनने के बाद हितेन और सारांश ने कहा- ''यह योजना बहुत अच्छी रही। रोहित स्वयं मेधावी छात्र है। इतनी सहायता के बाद वह अपनी तैयारी आराम से कर लेगा। साथ ही हमने एक नए समूह की नींव भी डाल दी है जो यकीनन हमारी कक्षा के लिए गर्व का विषय साबित होगी। हम प्रयत्न करेंगे कि उबुंतु टीम हर कक्षा में बने मानवता का पाठ पढ़ाए और भाईचारे व सहानुभूति का संदेश फैलाए।''

उबुंतु टीम की योजना कारगर साबित हुई। रोहित ने अच्छे अंक से परीक्षा पास कर ली। खुशी में उसने आभार प्रकट करने के लिए सभी मित्रों को पार्टी दी। पार्टी में उसने घोषणा करते हुए कहा- ''मित्रो! मैं एक कोचिंग सेंटर खोल रहा हूँ जहाँ विषयों को समझने में उन बच्चों को निशुल्क सहायता करूँगा। जो आर्थिक मजबूरी के कारण किसी कोचिंग सेंटर में नहीं जा सकते।''

रोहित की इस घोषणा का सबने तालियों से स्वागत किया और कई छात्रों ने वहाँ अपनी नि:शुल्क सेवाएँ देने का वादा भी किया।

- हावड़ा (पश्चिम बंगाल)

राजकीय मछलियाँ

मध्य प्रदेश की राजकीय मछली

महसीर

- डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत से ईरान तलक यह, मछली पायी जाती।
तेज धार नदियों में ऊपर- नीचे जाती-आती।।
पाँच फुटी यह भारी मछली,
मोटे शल्कों वाली।
आँखें बड़ी और मुँह चौड़ा,
लगती बड़ी निराली।।
मेंढक, मछली और केकड़े, बड़े शौक से खाती।
पौधे खाकर कभी-कभी यह, अपना काम चलाती।।
नदियों में ऊपर जाकर यह,
तल में नीड़ बनाती।
इसमें अपने अंडे देती,
फिर वापस आ जाती।।
बढ़ते हुए प्रदूषण से जब, इस पर संकट आया।
हो विलुप्त कुछ जल-स्रोतों से, इसने हमें जगाया।।

- भोपाल (म. प्र.)

आनंदप्रकाश जैन

– डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

हिन्दी बाल साहित्य जगत में आनंद प्रकाश जैन एक ऐसी अनन्य प्रतिभा थे जिन्होंने न केवल स्वयं कथा, उपन्यास, कविता और नाटक विधाओं में प्रचुर लेखन किया बल्कि तत्कालीन लेखकों को भी उत्कृष्ट बाल लेखन हेतु खूब प्रेरित और प्रोत्साहित किया।

वे मार्च १९६० से १९७२ तक लोकप्रिय बाल पत्रिका 'पराग' के दूसरे संपादक के रूप में भी कार्यरत रहे। उन्होंने शिशुगीत और किशोर साहित्य को लेकर खूब प्रयोग किए। संपादक के रूप में वे लेखकों के मार्गदर्शक और प्रशिक्षक भी थे। रचना को वापस करते समय प्राय: उनकी टिप्पणियाँ रचनाओं से भी अधिक लंबी हो जाती थीं।

आनंदप्रकाश जैन का जन्म १५ अगस्त १९२७ को उत्तर प्रदेश के शाहपुर, जनपद मुजफ्फर नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम पद्मासन जैन और माता का नाम मदन सुंदरी था। जैन साहब बचपन से ही लीक से हटकर चलने वाले रहे। १५ वर्ष की अवस्था में वे 'भारत छोड़ो' आंदोलन में सम्मिलित हुए। उनकी पहली रचना 'जीवन नैया' (कहानी) 'अनेकांत' मासिक में १९४१ प्रकाशित हुई, तब वे मात्र १४ वर्ष के थे। उन्होंने मात्र हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त की किंतु उनका अध्ययन और अनुभव बहुत व्यापक था। वे बहुत अधिक लिखने और छपने वाले रचनाकार थे।

उन्होंने 'चंदर' छद्मनाम से भी लेखन किया। उनकी मुख्य कृतियाँ हैं– 'भूलना मत काका', 'महाबली का भ्रम', 'तू चल मैं आया', 'ढीली ईंट का रहस्य', 'बुद्धूमल के कारनामे', 'नटखट नन्दू', 'ठिनको राजकुमारी', 'तेलंगाना की लोक कथाएँ', 'डेनमार्क की लोक कथाएँ', 'भारतीय गौरव की लोक कथाएँ', 'चंद्रलोक की राजकुमारी', 'ताऊ–तिलकू की कहानी', 'सोनबाला और सात बौने', 'राजा और भिखारी', 'सांवली सरोली', 'कबाड़ी राजा', 'चटोरे', 'अदृश्य मानव', 'अदृश्य एटम' पाँच खंडों में, 'चाँद की मल्का', दस खंडों में, 'डबल सीक्रेट एजेंट ००१/२' इत्यादि।

उन्होंने आठ भागों में सुनो कहानी पुस्तक–माला के रूप में ज्ञानप्रद और मनोरंजक कहानियों का संपादन भी किया।

'पराग' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने लेखकों से ही नहीं, बच्चों से भी सीधा संवाद स्थापित किया। उनके संपादकीय मनोविज्ञान की गहराइयों से ओतप्रोत होते थे। समसामयिक विषयों पर उनके लिखे सम्पादकीय आज भी पठनीय और विचारणीय हैं। काश! उनके सम्पादकीय एक स्थान पर प्रकाशित हो जाएँ तो यह बाल साहित्य के लिए उल्लेखनीय उपलब्धि होगी। बाल साहित्य के माध्यम से वे भावनात्मक पोषण के पक्षधर थे। वे आडंबरों के प्रबल विरोधी थे। उनका कहना था कि बाल साहित्य आरोपित नहीं, बल्कि स्वाभाविक होना चाहिए।

अनेक प्रतियोगिताएँ में उनकी रचनाओं को पुरस्कार मिले। उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से भी उन्हें लल्लीप्रसाद पाण्डेय बाल पत्रकारिता सम्मान प्रदान किया गया। सच, सबसे बड़ा सम्मान तो वे स्वयं ही थे। उनके कृतित्व के कारण आज बाल साहित्य गौरवान्वित है।

८ जुलाई १९९६ को मुंबई में उनका देहांत हो गया। आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ रोचक बाल रचनाएँ–

इलाज

रामू को जुकाम ने जकड़ा,
फौरन खटिया पकड़ी।
नाक निरख कर डॉक्टर बोलो–
फीस लगेगी तगड़ी।
बैग खोलकर डॉक्टर ने फिर,
चाकू एक निकाला।
नाक काटनी होगी बेटा,
यह क्या झंझट पाला ?
खटिया से छलांग लगाई,
खाक उड़ी ना धूल।
पंख लगाकर रामू पहुँचा,
पल भर में स्कूल।

बाल–कथा

हाथी भाई का पाजामा

मूषकराम ने हाथी भाई से कहा– ''परसों मेरे बेटे की बारात जाएगी। आपको भी चलना है।''

हाथी भाई ने कहा– ''ठीक है, चलेंगे।'

मूषकराम ने कहा– ''मेरे सब बारातियों ने नए कपड़े सिलवाए हैं। बारात में नंगे जाना ठीक न होगा। लोग हँसेंगे। कम–से–कम पाजामा तो सिलवा ही लो।''

हाथी भाई दर्जी की दूकान पर पहुँचे। दूकान के सामने इतना बड़ा ग्राहक खड़ा देख दर्जी घबरा गया। बाहर आकर हाथ जोड़े। बोला– ''आज्ञा महाराज ?''

हाथी भाई ने कहा– ''एक पाजामा सिलवाना है। कितना कपड़ा लगेगा ?''

दर्जी का दिमाग घूम गया। दूकान में उसके बेटे–पोते भी काम करते थे। सब हाथी भाई की कमर और टाँगों का नाप लेने में जुट गए। आखिरकार दर्जी ने बताया–''महाराज! दो थान लट्ठा लगेगा। बराबर में बजाज की दूकान है। ले आइए। अवश्य सिएँगे आपका पाजामा।''

हाथी भाई बजाज के पास पहुँचे। बोले– ''दो थान लट्ठा दो जी! पाजामा सिलवाना है।''

बजाज ने आँखें फाड़ दीं। बोला– ''महाराज! दो थान नकद दो हजार रुपए के होंगे।'' हाथी भाई ने पूछा। ''यह नकद रुपया कहाँ से मिलेगा ?''

''उसके लिए तो महाराज! काम करना पड़ता है। बाजार में घूमेंगे तो कोई–न–कोई काम मिल ही जाएगा।''

हाथी भाई बाजार के चक्कर काटने लगे।

एक जगह एक बड़ा–सा ट्रक खड़ा था। अनेक मजदूर गोदाम से कपड़े की बड़ी–बड़ी गाँठें ला–लाकर उस पर लाद रहे थे। एक मोटे–ताजे लाला जी इधर–उधर जल्दी–जल्दी घूम रहे थे। वह चिल्लाते जा रहे थे– ''अरे! भाई जल्दी करो। गाड़ी छूट जाएगी। सारा माल यहीं पड़ा रह जाएगा।''

माल लद गया, तो ट्रक अड़ गया। ड्राइवर ने

इंजिन को खरी खोटी सुनाई। किन्तु वह टस–से–मस न हुआ। लाला जी तो पागलों की तरह चिल्लाने लगे– ''हाय! मैं तो लुट गया। बर्बाद हो गया। यदि माल आज रेलगाड़ी पर नहीं चढ़ा, तो मेरा एक लाख का नुकसान कौन भरेगा!''

हाथी भाई ने लाला जी से कहा– ''लाला जी! मेरी छाती पर रस्सी बंधवाओ। दूसरा सिरा ट्रक के साथ बंधवाओ। मैं अभी माल को स्टेशन तक पहुँचा देता हूँ।''

फिर क्या था– जैसा हाथी भाई ने कहा, वैसा ही किया। हाथी भाई ट्रक को पीछे–पीछे लिए दौड़े। आधे घंटे में स्टेशन पर पहुँचकर ही दम लिया। मालगाड़ी चल पड़ने के लिए सीटी दे रही थी। लाला जी जल्दी मचाते रहे। नाचते रहे। हाथी भाई के रस्से खोल दिए गए। कुली लोग जल्दी–जल्दी माल प्लेटफॉर्म पर पहुँचाने लगे। किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। गार्ड ने हरी झंडी दिखा दी। गाड़ी जरा आगे को खिसकी। किन्तु थम गई। उधर लाला जी चिल्ला–चिल्ला कर नाचते रहे– ''दस हजार दूँगा... पंद्रह हजार दूँगा। अरे भाई! मेरा माल तो चढ़ने दो।''

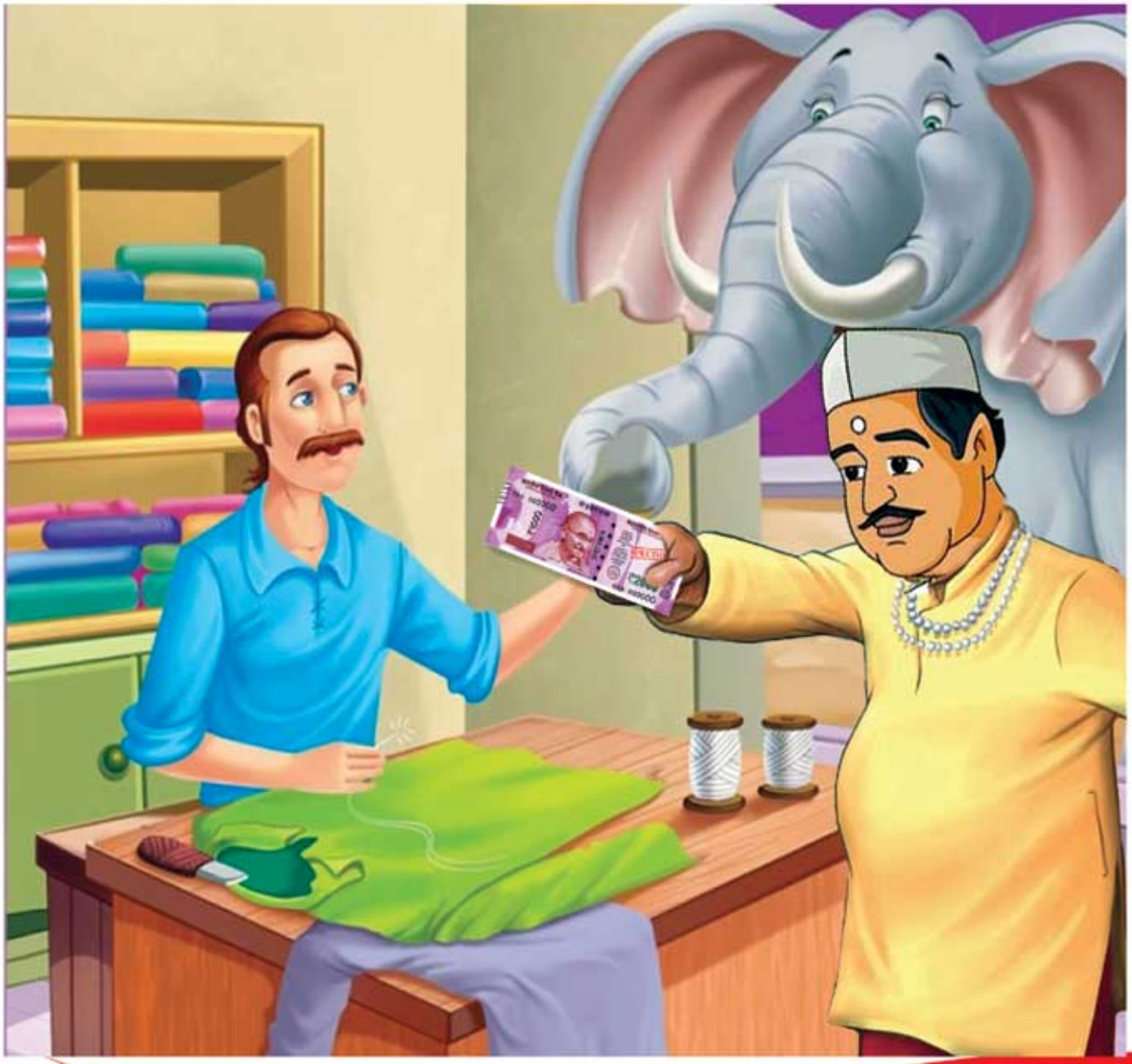

बीसियों कुली जुट गए। कपड़े की गांठें उठा-उठाकर गाड़ी के डिब्बे में फेंकने लगे। उधर गार्ड इंजिन के ड्राइवर पर चिल्लाया- ''गाड़ी क्यों नहीं चलाते? इतनी देर से हरी झंडी दिखा रहा हूँ?''

''मैं क्या करूँ? इंजिन के सामने हाथी भाई खड़े हैं। सीटी की आवाज भी नहीं सुनते।'' ड्राइवर ने कहा।

इधर पंद्रह मिनट तक स्टेशन मास्टर, गार्ड और ड्राइवर हाथी भाई की खुशामद करते रहे। उधर कुलियों ने सारा माल गाड़ी पर लाद दिया। अब लाला जी हाथी भाई के पास आए। बोले- ''वाह! मेरे प्यारे तूने तो हक अदा कर दिया। अब चलने दे गड्डी को।'' और उन्होंने हाथी भाई की सूंड पर हाथ फेरते हुए कहा- ''असल में तुम ही हो जंगल के राजा... गरीबों के सच्चे हमदर्द।''

हाथी भाई ने हैरत से लाला जी को देखा। इसके बाद, उन्होंने आव-देखा-न-ताव लाला जी को अपनी सूंड में लपेट लिया। सबके देखते-देखते हाथी भाई, लाला जी को आसमान की हवा खिलाते, बजाज की दूकान पर पहुँच गए। पीछे हा-हा-हू-हू करते लोगों की भारी भीड़ थी। हाथी भाई ने बजाज से कहा- ''लो, नकदी का भंडार ही ले आया हूँ। जल्दी से पाजामे का कपड़ा निकालो।''

बजाज ने लट्ठे के थान निकाल दिए। लाला जी ने दो हजार के नोट मलते-मलते गिने। हाथी भाई बोले- ''पाजामा पहन कर ही नंगा ही दिखाई दूँगा। बजाज भाई, लगे हाथों कुर्ते का कपड़ा भी दे दो।''

लाला जी ने झींक-झींक कर कुल पाँच हजार के नोट गिने। हाथी भाई ने कपड़े समेत लाला जी को फिर सूंड़ में उठाया। भागे-भागे दर्जी की दूकान पर पहुँचे। बोले- ''पाजामा सिलना है। कुर्ता भी सिलना है। लो ये कपड़े के थान। जो कपड़ा बचे, उसके रूमाल बना देना। नाक पोंछनी रहती है न। अपनी मजूरी लाला जी से पेशगी ले लो। बाद में मुझे तंग न करना।''

लोग हँसते रहे। लाला जी रोते रहे। पूरे सात हजार की टिप गई।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

बूझो तो जानें

- राजेश गुजर

यह रोबोट का चित्र अँग्रेजी के कौन-कौन से अक्षरों से बना है?

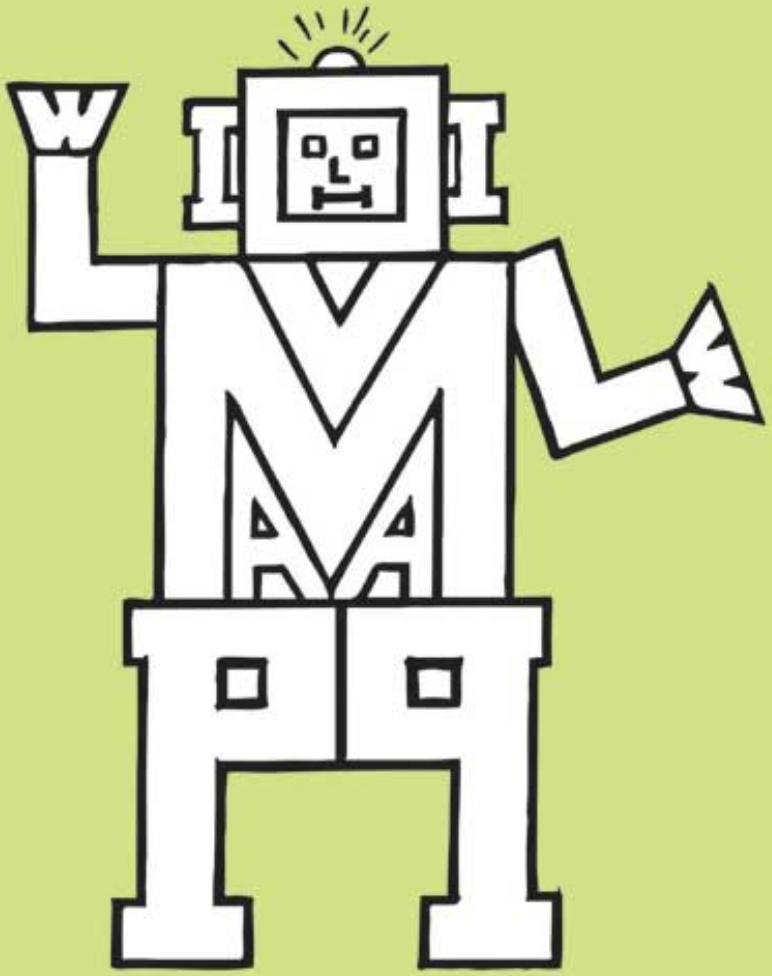

अंक चित्र

अँग्रेजी के १ से १० तक अंकों की सहायता से

बनाओ

– राजेश गुजर

चित्र बनाना सीखिए और रंग भरिए।

– महेश्वर (म. प्र.)

यों मत देर लगाओ

– यशपाल शर्मा 'यशस्वी'

सूरज चाचा बात हमारी, जरा मान भी जाओ।
ठंड बहुत लेकिन जगने में, यों मत देर लगाओ।
देरी से जब तुम आते तो, नींद नहीं खुल पाती।
विद्यालय में देर हुई तो, दीदी डाँट लगाती।
जाने में भी जल्दी इतनी, तुम आने क्यों करते,
धूप गुनगुनी साँझ-सवेरे, कितनी हमें सुहाती।
माँ से कह घर में अपने, हीटर तुम लगवाओ।
ठंड बहुत लेकिन जगने में, यों मत देर लगाओ।
गर्मी में तो जल्दी आकर, आग खूब बरसाई।
देर शाम तक डटे रहे तुम, दया न तुमको आई।
क्या जुकाम-खाँसी से हालत, हुई तुम्हारी पतली,
क्यों कर इतनी देर कहो तुम, सोते ओढ़ रजाई।
अपने डर को त्यागो थोड़ी, चाय कड़क बनवाओ।
ठंड बहुत लेकिन जगने में, यों मत देर लगाओ।
ऊनी कपड़े पहन ओढ़ कर, पड़ता हमको रहना।
खेल न पाते देर शाम तक, मिलकर भाई-बहना।
काँपे मुनिया ठिठुरे मुन्नू, मौसम है बर्फीला,
तुम क्या जानो कितना कुछ हैं, पड़ता हमको सहना।
गुड़ के साथ गरम मूँगफली, तिल के लड्डू खाओ।
ठंड बहुत लेकिन जगने में, यों मत देर लगाओ।
सूरज चाचा बात हमारी, जरा मान भी जाओ।
ठंड बहुत लेकिन जगने में, यों मत देर लगाओ।

– चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

सड़कों की पगडंडियाँ

– शीला पांडे

आगम बारह–तेरह वर्ष को एक किशोर बालक था। उसके विद्यालय की जाड़े की छुट्टियाँ पड़ी थीं। वह अपने परिवार के साथ कुछ दिनों के लिए कार से कहीं अच्छे स्थान पर घूमने जा रहा था। साथ में उसके दादा जी भी थे। दादा जी का साथ उसमें एक नया रोमांच भर रहा था और पोते की मित्रता दादा जी को भाव–विभोर कर रही थी। दोनों बातूनी बन गए थे। दोनों बेमेल मित्र हँसोड़ और चटोर भी गजब के थे। आज यह राज पहली बार खुल रहा था।

आजमगढ़ शहर की सड़क पर सजी एक दुकान पर सब की प्लेटों में प्रसिद्ध मिठाई 'लौंगलत्ता' सजी थी। सबकी निगाहें लौंगलत्ता देखकर ललचा रही थीं। बिल्कुल ठीक वैसे ही जैसे चॉकलेट देखकर एक छोटा बच्चा ललचाता है। लच्छेदार बातों के बीच हँसी के फव्वारे छूट रहे थे। यह हँसी के फव्वारे थोड़ी देर के लिए अचानक थम गए थे। सभी लोग प्लेटों में सजी आजमगढ़ की प्रसिद्ध लौंगलत्ता मिठाई चट करने में लग गए थे। लौंगलत्ता की अद्भुत मिठास जब मुँह में अच्छी तरह से घुल गई तब कारवाँ सड़क पर फिर बढ़ चला। सड़क के किनारे पर लगे सफेद शिलाखंड पर लिखा था कानपुर ४०० किलोमीटर।

आगम के दादा जी ने आगम से पूछा– ''क्या बता सकते हो कि यह सड़क किसने बनवाई है?''

आगम ने कहा– ''मुझे कैसे ज्ञात होगा दादा जी? मैं तो बस इस पर चल रहा हूँ।''

दादा जी ने हँसकर बताया– ''यह सड़क जिला प्रशासन ने बनवाई है।''

यह देखो शिलापट पर सफेद और काले रंग का उपयोग किया गया है। इसका मतलब है कि यह नगर या जिला की सड़क है। इसे जिला प्रशासन ने बनवाया है। आगम यह जानकारी पाकर आश्चर्यचकित रह गया था। उसने तो कभी सोचा ही नहीं था कि शिलापट पर रंगे रंगों से यह जाना जा सकता है कि इस सड़क को किसने बनवाया है और यह सड़क किसके नियंत्रण में है?

आगम रोमांचित हो गया था। दादा जी आगम के चेहरे के भाव को मुदित होकर पढ़ रहे थे। उन्हें आगम को खुश देखकर बहुत अच्छा लग रहा था।

कार में बैठे आगम के माता–पिता दादा और पोते के संवाद को आनंद उठा रहे थे। आगम के पिता जी ही कार को ड्राइव कर रहे थे। मौसम बड़ा सर्द था लेकिन रास्ते की चारों ओर की बिखरी हरियाली जैसे ताजगी और नयेपन का अनुभव भर रही थी।

गन्ना, गेहूँ, मटर, सरसों और सब्जियों के खेत सड़क की दोनों ओर अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य को रच रहे थे। यह किसानों की सर्जना थी जिनका सर्जक आपनी दिनचर्या के कामों में संलग्न था। कोई सिंचाई कर रहा था, तो कोई खेतों में फसल की देखभाल। कर्मठ अन्नदाता अपनी कर्म तपस्या में लीन थे। सचमुच सर्जक का संघर्ष बड़ा कठिन होता है लेकिन उसके परिणाम भी बेहद कल्याणकारी होते हैं।

मोबाइल फोन की घंटी बज पड़ी थी। आगम के पिता जी ने फोन उठाया। उनके अधिकारी का फोन था। फोन से पता चला कि अधिकारी की बेटी की शादी थी। अत: कुछ और दिनों के लिए शादी की तैयारी हेतु छुट्टियों पर ही रहेंगे। यह बात सुनकर आगम के सभी परिवार और भी अधिक हर्षित हो गए थे। थोड़ा समय आगम को और मिल जाएगा मौज–मस्ती करने का। यह सोचकर आगम तो बहुत प्रसन्न था।

कार सड़क पर फर्राटे भर रही थी। कार में बैठे–बैठे सभी लोग जाड़े की गुनगुनी धूप का आनन्द ले रहे थे। हरियाली और लोक जीवन कदम–कदम पर उनका स्वागत कर रहे थे।

इधर दादा और पोते की आँखों ही आँखों में बातें हो चुकी थीं। अत: अगले पड़ाव के रूप में अयोध्या पार करने के बाद रामसनेही घाट के पहले ही भिटरिया पर आकर कार खड़ी हो गई थी।

सड़क पर भीड़ भरी दुकान पर गरमागरम कम मसाले की प्रसिद्ध मजेदार आलू की टिक्की और छोले की चाट का पूरा आनंद उठाया जा रहा था। इस बार तो माँ और पिता जी भी चाय की चुस्कियों के साथ स्वाद का बखान कर रहे थे। छुट्टियों का भरपूर आनंद लिया जा रहा था।

कारवां आगे बढ़ चला था। बातों का सिलसिला भी फिर से चल पड़ा था। जहाँ अनेक जिज्ञासाएँ शांत हो रही थीं तो वहीं चुटकुले और किस्से भी आपस में खूब सुनाए जा रहे थे।

लखनऊ पहुँचने के पहले दादा जी और आगम को लघुशंका के लिए कार से उतरना था क्योंकि अगल-बगल कोई भी पेट्रोल पंप दिखाई नहीं दे रहा था। अत: सड़क के किनारे झाड़ियों के पास कार एक स्थान पर रुक गई थी। आगम और दादा जी लघुशंका से निवृत्त होकर जब वापस कार में बैठने के लिए लौट रहे थे तभी आगम की दृष्टि सड़क के किनारे पर लगाए गए एक दूसरे शिलापट पर पड़ी।

आगम उसे गौर से देखने लगा। इस बार शिलापट पर ऊपर का भाग अर्थात शीर्ष हरे रंग से रंगा हुआ था और नीचे सफेद रंग में रंगा था जिस पर किलोमीटर में लखनऊ की दूरी अंकित थी।

आगम उसे गौर से देखने लगा। इस पट का शीर्ष सफेद या काला नहीं, बल्कि हरा क्यों है? क्या इसका भी कोई विशेष अर्थ होता होगा? आगम के मन में जिज्ञासा उठी।

''दादा जी शिलापट का सिर जब हरे रंग से रंगा गया हो तो क्या इसका भी कोई विशेष मतलब होता है?'' आगम ने दादा जी से पूछा।

शिलापट देखते-देखते दादा जी मुस्कुराते हुए बोले- ''बिल्कुल विशेष अर्थ होता है बेटा! शिलापट के सिर पर हरे रंग का अर्थ होता है कि यह सड़क यानि 'राष्ट्रीय राजमार्ग' है। अर्थात् यह सड़क राज्य सरकार द्वारा बनवाई गई है और यह सड़क राज्य के नियंत्रण में आती है। इसका रखरखाव और जिम्मेदारी भी राज्य सरकार स्वयं संभालती है।''

आगम के लिए सड़क पर लगे शिलापट के शीर्ष अब कौतुहल के विषय बन गए थे। नई-नई जानकारी उसे बहुत रोमांचित कर रही थी। अब तो आगम की दृष्टि जैसे शिलापटों के शीर्ष पर रंगे-रंगों पर शोध करने को आतुर हो गईं थीं। आगम की निगाहें सड़क पर लगे शिलापटों को खोजने लगीं थीं।

थोड़ी देर बाद कार उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ शहर में प्रवेश कर गई थी। लखनऊ शहर अब भव्य बन चुका था। शहीद पथ पर पहुँचते ही राष्ट्रीय इकाना स्टेडियम, प्लासियो मॉल, लु लु मॉल, रमाबाई अंबेडकर स्मृति पार्क, अवधग्राम शिल्प आदि दिखाई देने लगे थे। इन्हें देखते ही आगम मचल पड़ा। ''पिता जी! हमें लखनऊ घूमना है। यहाँ पर दो दिन रुकते हैं ना?'' पिता जी के पास छुट्टियाँ पर्याप्त थीं। अत: उन्होंने आगम को भरोसा दिलाया

कि– ''कानपुर तुम्हारी मौसी के यहाँ से लौटते हुए हम अपनी कुछ छुट्टियाँ इस बार लखनऊ शहर में भी रुक कर मनाएँगे।''

आगम पिता जी के मुँह से यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हो गया। उसके चेहरे की चहकन बढ़ गई थी। उसका मन एक अजीब सी तृप्ति से भर गया था लेकिन उतना ही अब लखनऊ घूमने की उत्कंठा भी बढ़ गई थी। दो घंटे बाद सभी लोग कानपुर आगम की मौसी के घर पहुँच गए थे।

मौसी जी और शेखर ने खूब सारा व्यंजन मोहित की सहायता से तैयार कर लिया था। शेखर आगम का मौसेरा भाई था। शेखर और आगम की मित्रता बड़ी पुरानी थी लेकिन कोविड–१९ महामारी फैलने के कारण वे सब पिछले तीन वर्षों से आपस में नहीं मिल पाए थे।

मोहित शेखर का नौकर था जो बहुत मेंहनती और प्रसन्न स्वभाव का था। शेखर अधिकांश मोहित के साथ खेलता था। मोहित को सामान्य जन–जीवन की समझ बहुत अच्छी थी। उनके व्यवहार की अच्छी जानकारी थी परंतु नगरीय तथा तकनीकी संसार की दुनिया में वह थोड़ा कच्चा था।

स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेने के बाद सभी लोग अंदर अपने–अपने कमरों में आराम करने चले गए। लेकिन आगम, शेखर और मोहित पार्क के पास मैदान में खेलने के लिए निकल पड़े।

बगीचे के पास मैदान में तीनों मिलकर क्रिकेट खेलने की जुगत में थे। तभी अचानक उनके आस–पास चारों ओर शोर उठने लगा। बागीचे के दूसरे सिरे पर एक लाइव बिजली का तार टूटकर नीचे गिर पड़ा था जिसमें अथाह करंट दौड़ रहा था।

बागीचे की घास और छोटे–छोटे पौधे तार के संपर्क में आते ही सुलगने लगे और थोड़ी देर में पौधे और घास धू–धू कर जलने लगे। आग बड़ी तेजी से सड़क पार के घरों तक तार के माध्यम से पहुँचने लगी थी। सभी लोगों में हड़कंप मच गया।

मोहित घबराहट में था। उसने एक भारी भूल कर दी और बागीचे में लगे पानी के पाइप से पानी फेंकने की यत्न करने लगा।

शेखर बिजली विभाग को फोन करने के लिए मोबाइल में बिजली विभाग का नंबर ढूंढ़ रहा था।

तभी आगम की दृष्टि मोहित के हाथ में पकड़ी पानी से भरी पाइप पर गई। वह आग बुझाने के लिए पानी का फव्वारा करंट पर फेंकने ही वाला था। आगम लंबी छलांग लगाकर मोहित के हाथ में पकड़ी पानी भरी पाइप पर झपट पड़ा और फुर्ती से पानी की धार को आग की विपरीत दिशा में मोड़ दिया।

आगम ने चिल्लाकर दहाड़ा–''पानी नहीं मिट्टी लाओ। धूल लाओ। धूल से आग बुझाओ, पानी से नहीं। पानी से आग और भड़केगी। यह बिजली की आग है बिजली की आग।''

आगम पार्क की क्यारी से मिट्टी उठा–उठा कर आग पर फेंकने लगा। वह चिल्लाता जा रहा था– ''तुम लोग भी आग पर मिट्टी फेंको। तार को मिट्टी से ढँक दो। फेंको, सब लोग मिट्टी फेंको। जल्दी फेंको।''

अब तक आसपास के सभी लोग सहायता के लिए पहुँच चुके थे। कोई गमले तोड़कर मिट्टी फेंक रहा था। कोई सूखी मिट्टी फेंक रहा था तो कोई पड़ा पत्थर ही उठाकर तार पर पटक दे मार रहा था।

थोड़ी देर में आग कम होने लगी। आग पर अब आसानी से काबू पाया जा सकता था। क्योंकि सभी लोगों ने तेजी से दौड़-दौड़ कर आग पर सूखी मिट्टी फेंकने की गति को बढ़ा दिया था।

इधर शेखर को बिजली विभाग का नंबर भी मिल गया था। उसने तुरंत आग लगने की सूचना विभाग को दी और तत्काल पूरा बिजली विभाग सक्रिय हो गया। सब डिविजनल अधिकारी ने तुरंत एस. ओ. को फोन करके सब स्टेशन की बिजली कटवा दी थी। बिजली कटते ही तार में करंट दौड़ना बंद हो गया था। इसलिए अब बड़ी आसानी से आग पर काबू पा लिया गया था और थोड़ी ही देर में आग बुझा दी गई थी।

घटना स्थल पर पहुँचकर सब डिवीजनल अधिकारी ने पूछा- ''यह सूझबूझ किसकी थी? मैं उससे मिलना चाहता हूँ।''

आगम के माता-पिता, मौसी और दादा जी भी अब तक घटना स्थल पर पहुँच चुके थे। दादा जी ने गर्व से कहा कि- ''वह सामने देखिए इन तीनों बच्चों को। यह तीनों बच्चे मिलकर अभी तक सभी की सहायता से आग बुझा रहे थे। इन्हीं तीनों के कारण आग से कोई नुकसान नहीं हो पाया और समय रहते आग बुझा ली गई।'' वहाँ उपस्थित अन्य सभी लोगों ने भी दादा जी की हाँ में हाँ मिलाई।

मोहित ने आगे बढ़कर कहा- ''नहीं हम तीनों ने नहीं, बल्कि आगम भैया की सूझबूझ से यह आग बुझ पाई है। उन्हें पूरी जानकारी थी कि बिजली की आग पानी से नहीं बल्कि धूल और मिट्टी से ही बुझाई जा सकती है। हम लोग यह बात बिल्कुल भी नहीं जानते थे। इसलिए आगम भैया नहीं होते तो अनर्थ हो जाता। पूरे मोहल्ले में आग फैल जाती और जानमाल का भारी नुकसान होता।''

बिजली विभाग का अधिकारी जहाँ आगम से अत्यधिक प्रसन्न हुआ। वहीं दादा जी का सीना भी गर्व से चौड़ा हो गया था। उन्हें अपने पोते पर गर्व हो रहा था कि उसने अपने ज्ञान का सही सदुपयोग करके सबकी जान बचायी थी और संसाधन की रक्षा की थी। आगम के माता और पिता ने झट से आगे बढ़कर आगम और शेखर को अपने गले से लगा लिया था- ''बच्चो! आज तुम लोगों ने संकट में धैर्य और बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। इसीलिए हम सभी सकुशल और सुरक्षित हैं। शाबाश मेरे बच्चो! शाबाश।''

''जियो मेरे शेर! जियो।'' कहते हुए दादा जी ने मोहित को भी अपने अंकवार में भर लिया था।

अधिकारी तीनों बच्चों और एकत्रित हुए सभी लोगों का धन्यवाद कर रहा था। वह आग्रह कर रहा था कि सभी सदैव इसी प्रकार से विभाग की सहायता करें। समय पर सूचना दें और कोई बड़ी दुर्घटना होने से बचा लें।

अधिकारी के जाने के बाद सभी लोग अपने-अपने घरों को वापस लौट गए थे। सभी के चेहरों पर सुख और शांति फिर से लौट आयी थी।

शेखर और मौसी-मौसा जी के साथ आगम का बाकी समय बहुत अच्छा बीता था। अगले एक दिन कानपुर में मौसी और उनके परिवार के साथ मिलकर खूब धमाल मचाया गया।

उसके अगले दिन सवेरे ही आगम का परिवार लखनऊ के लिए रवाना हो गया था।

आगम के सड़क पर चलते ही शिलापटों की याद फिर से ताजा हो आई थी। वह कार के खुले शीशों से लगातार शिलापटों को ढूँढ़ रहा था।

अचानक उसका दिल मचल पड़ा। उसने दादा जी की ओर देखकर उत्साह से पूछा- ''दादा जी!

जिन शिलापटों के सिर पर पीली पगड़ी पहनाई गई हो वे भला क्या बताते हैं? यह भी तो बताइए।'' यह कहकर आगम जोर-जोर से हँसने लगा।

आगम की माँ को पगड़ी वाली बात बहुत सुहाई। पगड़ी वाली बात पर माँ और पिता जी दोनों मुस्कुराने लगे। दादा जी हो-हो करके हँसते हुए बोले- ''सही पूछा तुमने।''

''शिलापटों का ऊपरी भाग अर्थात उसके शीर्ष पर यदि पीले रंग से रंगा गया हो यानी पीली पगड़ी पहनायी गयी हो तो इसको अर्थ है कि यह सड़क यानि 'राष्ट्रीय राजमार्ग' है। जैसे अब हम लखनऊ और झाँसी के 'एन. एच.-२६ नेशनल हाईवे' पर चल रहे हैं। इसीलिए इस शिलापट के सिर पर पीले रंग से रंगा गया है अर्थात इसे पीली पगड़ी पहनाई गई है। पीली पगड़ी मतलब 'नेशनल हाईवे'। हा-हा-हा अब समझे।''

''धन्यवाद दादा जी! आज आपने मुझे सड़क और शिलापट के बारे में बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारी दी।'' आगम ने दादी जी को गले लगाते हुए बोला। दादा जी बोले- ''अरे! इतना ही नहीं। यदि किसी सड़क के किनारे शिलापट या सूचना चिह्न के ऊपर ऑरेंज यानी संतरी रंग के रंग का प्रयोग किया गया हो, और उस पर सड़क भी छपी हो। तो समझ लो, कि वह सड़क प्रधानमंत्री सड़क योजना के अंतर्गत गांव और शहर को जोड़ने के लिए बनाई गई है। जिससे गांव का व्यापार और विकास शहर से जुड़ सके तथा गांव की उन्नति हो सके।''

''वाह दादा जी! वाह! आज तो मुझे बहुत सारी नई-नई जानकारी आपसे मिली। अब आप हमेशा मेरे साथ चलिएगा। पिता जी ठीक है ना?''

''हाँ! बेटे बिलकुल! अब दादा जी हमेशा हमारे साथ रहेंगे।''

दादा जी मन ही मन प्रसन्न होते हुए तुरंत बोले- ''अरे! आगम अभी लखनऊ भी तो घूम लो।

तुम्हारी माँ कब से कैमरे को सँवार कर तैयार कर रही हैं फिर अगली बार का बाद में सोचेंगे।''

आगम की माँ ने बहुत सारी बातें दादा और पोते की अब तक रिकॉर्ड कर ली थी। वह चुप रहकर अपने मिशन रिकॉर्डिंग पर व्यस्त रहीं थीं। ''यह संचित किया गया सारा विजुअल और ऑडियो आगम की अगले जन्मदिन पर उपहार किया जाएगा जो जीवंत और अनमोल होगा।'' आगम की माँ धीरे से मुस्कुराईं। कानपुर से लखनऊ पहुँचकर अगले दो दिन तक लखनऊ में रुका गया और खूब भ्रमण किया गया। पर्यटन का असली आनन्द भूल-भुलैया, रूमी गेट, आम्बेडकर पार्क, जनेश्वर मिश्र पार्क और चिड़ियाघर को घूमने में आया।

सभी कुछ सुखद क्षणों के रूप में कैमरे में कैद कर लिया गया था। ढेर सारी मौज-मस्ती और रोमांच के साथ-साथ नई-नई जानकारियाँ भी अब की छुट्टियों में उपहारों के तौर पर खूब मिलीं थीं।

अब लखनऊ घूम कर सभी अपने छोटे से शहर में वापस अपने घर को लौट रहे थे। 'सड़कों की पगडंडियाँ' आगम की आँखों और मानस पटल पर सजीव थीं। 'यह छुट्टी अनमोल थी'। आगम मुस्कुराया। अगली छुट्टियों की प्रतीक्षा करता आगम दादा जी की गोद में कब का सो चुका था, यह उसे पता ही नहीं चला था। कार घर की ओर तेजी से बढ़ी जा रही थी। आगम नींद में एक बार फिर से नए मीठे-मीठे सपनों में खो गया था।

- लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

घर का वैद्य

छोटी-छोटी व्याधियों का उपचार

– उषा भण्डारी

आज सभी दादा जी से छोटी-छोटी व्याधियों का उपचार जानने की बातें कर रहे थे। संध्या होते ही बच्चे दादा जी के आसपास बैठ गये। रोहू ने दादा जी से कहा आज हमें मुँह के छालों, आँख, कान और दाँत की बीमारियों, खुजली तथा पेट के कीड़ों का उपचार बताइये।

मुँह के छाले

रोहू बोला– ''दादा जी मुँह में यदि छाले हो जाएँ तो क्या करना चाहिए?''

दादा जी ने कहा– ''चमेली के कुछ पत्तों को मुँह में रखकर चबाएँ। दो मिनट बाद थूँक दे। फिर पानी से गरारे कर लें। दादा जी ने आगे बताया। ग्लीसरीन या घी लगाने या फिर गोंद की डली चुसने से भी छाले ठीक हो जाते हैं।''

रोहू ने पूछा– ''दादा जी! शहर में डॉक्टर तो कहते हैं छाले भोजन में विटामिन की कमी से होते हैं। क्या यह सत्य है?''

दादा जी बोले– ''हाँ बेटे! विटामिन की कमी या हाजमा खराब होने से मुँह से छाले हो जाते हैं। इसलिए छाले होने पर लाल टमाटर, मूली, गाजर आदि खूब खाने चाहिए।''

आँख आ जाए तो क्या करें

सीमा ने पूछा– ''दादा जी! आँख में जलन और दर्द हो। तथा आँखें लाल हो जाएँ तो क्या करना चाहिए?

दादा जी ने कहा– ''इसे आँख आना कहते हैं। एक ग्राम फिटकरी को ५० ग्राम गुलाबजल में मिला दें। इस दवा की दो तीन बूँद दिन में कई बार दोनों आँखों में टपकाएँ। इससे आँख एक-दो दिन में पूरी तरह ठीक हो जाती है।

सीमा ने पूछा– ''यदि घर में गुलाब जल और फिटकरी नहीं हो तो क्या करना चाहिए?''

दादा जी ने कहा– ''कुनकुने पानी से आँखें कई बार धोना चाहिए और दिन में तीन बार काँदे (प्याज) के रस की दो बूँद आँखों में टपकाना चाहिए।''

दाँतों की बीमारियों का उपचार

दीपक ने कहा– ''गोली, चॉकलेट यह मीठा अधिक खाने और बहुत गरम या ठंडी चीज खाने से इस आयु में दाँतों में दर्द होता है। सोने से पहले मुँह साफ नहीं करने से भी दाँत दर्द करते हैं।''

दादा जी ने आगे बताया– ''इन चीजों का उपयोग कम से कम करना चाहिए तथा सुबह उठकर और रात को सोने से पहले मुँह और दाँतों की सफाई करना चाहिए। यदि दाँतों में दर्द हो तो लौंग चबायें। थोड़ी देर के लिए लौंग का रस मुँह में ही रहने दें। या फिर पिसी हुई हल्दी को दाँतों पर रगड़ने से दर्द ठीक हो जाता है।

सीमा ने पूछा– ''दादा जी! दाँत साफ और मजबूत करने का कोई उपाय बताईये।''

दादा जी ने कहा– ''नीम और बबुल की दतौन करने से दाँत मजबूत रहते हैं और खराब भी नहीं होते हैं। आजकल तो शहरों में सुबह-सुबह नीम और बबूल की दत्तौन बेचने वाले भी मिल जाते हैं।''

राजू ने पूछा– ''मसुड़ों में सूजन हो और उनसे खून निकलता हो। तब क्या करना चाहिए?''

दादा जी ने कहा– ''एक चुटकी भर पीसा हुआ सेंधा नमक हथेली में लो, उस पर एक चम्मच सरसों का तेल डाल दो। ऊँगली से उनको मिलाकर मसूड़ों पर हल्की-हल्की मालिश करें। दाँतों पर भी रगड़े। ऐसा थोड़ी देर करके गुनगुने पानी से गरारे कर लो।''

राजू ने पूछा– ''ऐसा कितने दिन तक करना चाहिए?''

दादा जी ने कहा– ''सुबह उठकर और रात को सोते कम से कम बीस दिन तक करना चाहिए। ऐसा जीवन भर करोगे तो दाँतों की कोई बीमारी नहीं होगी।''

– इन्दौर (म. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

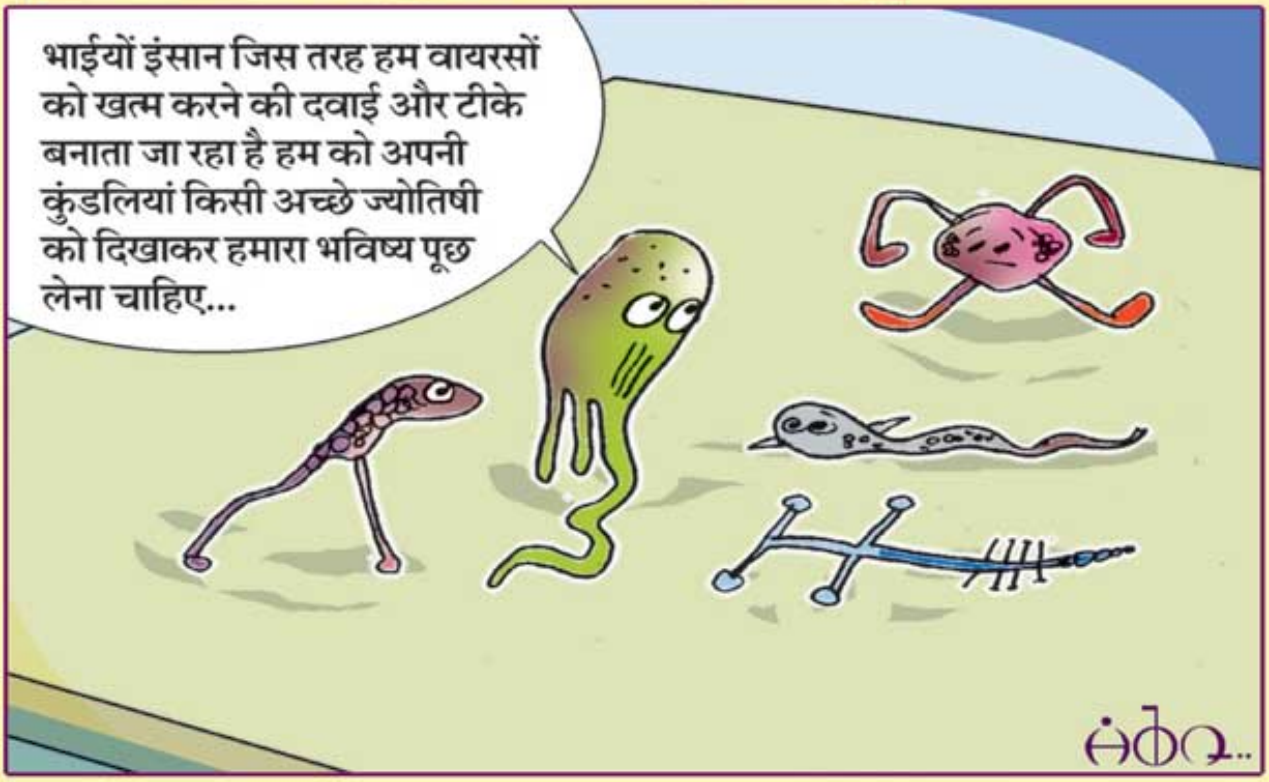

भागे डरकर डाकू

– रजनीकांत शुक्ल

वह ३ नवम्बर १९९९ बुधवार का दिन था। सर्दी के मौसम में तो वैसे भी दिन छोटे लगते हैं और उस दिन संयोग से उन्हें दुकान से निकलते–निकलते काफी समय लग गया था।

उस समय तक बाजार और सड़कों पर चारों ओर सन्नाटा छा चुका था। सर्दी में सभी रजाइयों की शरण में जा चुके थे। वे दोनों पिता पुत्र भी लम्बे–लम्बे कदम बढ़ाते हुए कोरीबाड़ा मोहल्ले की ओर बढ़े जा रहे थे। मुख्य सड़क से वे जैसे ही अपने घर वाली गली में घुसे तो उन्होंने ध्यान दिया कि दो अनजान लोग वहाँ खड़े हैं। उन्होंने आगे बढ़कर आशीष और उसके पिता को निकट से देखकर पहचाना और पीछे हट गए। उनका इस प्रकार घूरकर देखने से अपनी गली में होते हुए आशीष को अजीब–सा लगा। उसका मन किया कि वह उनसे पूछ ले कि वे लोग कौन हैं? और उन्हें किससे मिलना है?

उन्होंने सोचा– होंगे कोई हमें क्या? रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे और उन्हें जल्दी घर पहुँचना था।

तभी वे लोग भी अब धीरे–धीरे उनके पीछे आने लगे थे। यह देखकर आशीष और रामजी प्रसाद ने अपनी चाल थोड़ी तेज कर दी उनका घर पास आ चुका था। उन्होंने जल्दी ही घर के सामने पहुँचकर जोर से दरवाजा खटखटाया। कुछ ही देर में आशीष के छोटे भाई प्रिंस कुमार ने अन्दर से आकर घर का द्वार खोला। वे दोनों अपने घर में घुसने लगे।

रामजी प्रसाद और प्रिंस आगे थे। तभी उनके बिलकुल पीछे खड़े करीब आठ दस लोग जबरदस्ती बाहर से धक्का मारकर घर के अन्दर घुसने लगे। अब कहाँ आठ दस हथियार बंद बदमाश और कहाँ पन्द्रह और सोलह साल के नन्हें किशोर, दरवाजा खुल गया था। यह देखकर रामजी प्रसाद जो इस बीच आगे बढ़ चुके थे वे तेजी से अन्दर की ओर भाग लिए और दौड़कर जीने से होते हुए ऊपर घर की दूसरी मंजिल पर चढ़ गए और पड़ोसियों से सहायता माँगने के लिए बड़ी जोर–जोर से चिल्लाने लगे। इधर डाकुओं ने जब रामजी प्रसाद को भागकर सहायता माँगते सुना तो उन्होंने आशीष को अपने कब्जे में कर लिया। उन्होंने उसकी कनपटी पर पिस्तौल लगा दिया। पर आशीष इतनी आसानी से उनके कब्जे में आने वाला नहीं था। आशीष ने जब अपना बचाव करना चहा तो उनमें से चार–पाँच डाकू मिलकर उसकी पिटाई करने लगे।

डाकुओं के लगातार लगने वाले मजबूत प्रहारों से आशीष का प्रतिरोध कुछ धीमा हुआ उनकी मार से वह गम्भीर रूप से घायल होकर जमीन पर नीचे गिर गया। भाई की ऐसी हालत देखकर प्रिंस कुमार दौड़कर आया और उन डाकुओं पर झपट पड़ा।

उसके सामने जो डाकू आया प्रिंस ने उसकी

गर्दन को पकड़कर दबोच लिया। इसके साथ ही उसने अपने दाँत पूरी ताकत से गड़ाकर उसे बुरी तरह काट लिया। जिससे वह डाकू दर्द से बुरी तरह बिलबिला गया।

यह देखकर डाकू के एक अन्य साथी ने प्रिंस पर लात और घूँसों के एक के बाद एक अनेक वार कर दिए। इतनी मार खाने के बाद भी उसने हिम्मत और डाकू की गर्दन दोनों को ही नहीं छोड़ा। उसे जमीन में घायल पड़ा हुआ अपना भाई आशीष दिखाई दे रहा था। जिसे उसी डाकू ने उसके सामने मारा था। अब दाँतों में उसकी चमड़ी को जकड़े उसकी आँखों में गुस्से से आग की चिंगारियाँ निकल रहीं थीं।

वे डाकू हाथ पैरों से इन दोनों जाँबाजों पर काबू पाने में असमर्थ दिखाई दिए। उधर रामजी प्रसाद छत से लगातार सहायता के लिए गुहार लगा रहे थे। कमजोर को हथियार का सहारा उन बदमाशों ने कोई बस न चलता देखकर इन दोनों बहादुर लड़कों पर गोली चला दी। उनमें से एक गोली सीधी प्रिंस की पीठ में जाकर लगी। गोली लगते ही प्रिंस के दाँतों की पकड़ उस बदमाश पर ढीली हुई। उन्होंने स्वयं को छुड़ाया और तेजी से बाहर की ओर भागते हुए उनमें से एक ने प्रिंस की ओर लक्ष्य करके एक बम उछाल दिया।

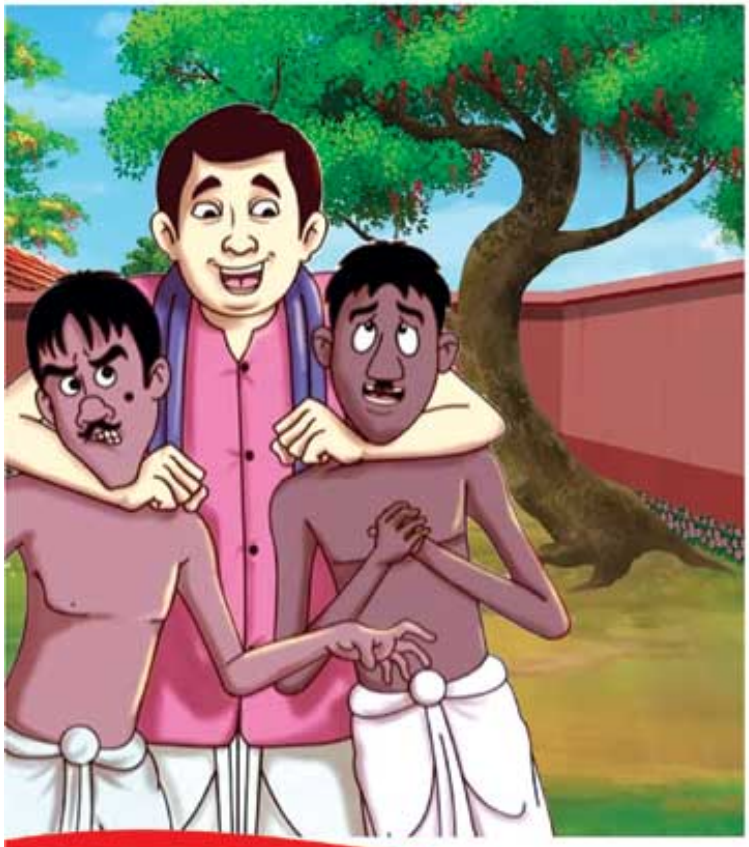

एक जोर का धमाका हुआ और पूरे आँगन में धुआँ ही धुआँ फैल गया। उस धुएँ से प्रिंस की आँखें चौंधिया गईं और वह लड़खड़ाकर वहीं पर गिर गया। डाकुओं ने वहाँ से भाग जाने में ही अपनी भलाई समझी। आसपास के लोग रामजी प्रसाद के चिल्लाने गोली और बम के धमाकों के शोर पर अपनी आवाज देने लगे थे। उन डाकुओं की चाल उल्टी पड़ चुकी थी। शायद वे यह सोचकर नहीं आए थे कि उन्हें उन नन्हें बच्चों से ऐसे कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा।

उनके भागते ही मोहल्ले के बहुत सारे लोग घर में घुसकर आ गए। उन्होंने मिलकर जल्दी से प्रिंस और आशीष को चिकित्सालय पहुँचाया। जहाँ ऑपरेशन करके प्रिंस की पीठ में लगी गोली निकाली गई। चारों ओर प्रिंस और आशीष की बहादुरी के चर्चे गूँज उठे। पुलिस आई। अगले दिन अखबारों में फोटो के साथ प्रिंस और आशीष के अदम्य साहस की इस घटना को प्रकाशित किया।

कुछ दिनों के बाद उन दोनों का नाम वीरता पुरस्कार के लिए उचित माध्यम से नई दिल्ली भेजा गया तो उन्हें वर्ष २००० के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार की विशेष कोटि 'संजय चोपड़ा पुरस्कार' से चुन लिया गया। वर्ष २००१ के गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उन्हें इस राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नन्हें मित्रो!

वक्त आए तो कभी न डरते, आँधी तूफानों से,
कितना भी हो बड़ा अँधेरा, डरे शमादानों से।
स्थितियाँ हों कैसी भी हम कभी ना मानें हार,
आएँ सामने तलवारें या हों गोली का वार।

– नई दिल्ली

कहानी : वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर

महावीरों से बड़े वे बाल वीर

– गोपाल माहेश्वरी

माधव अभी केवल नौ वर्ष का था। प्रतिदिन अपने ताऊ जी और उनके बेटे सुबोध के साथ नियमित घूमने जाता। घूमते–घूमते उनके बीच कभी कोई गीत कभी कोई कहानी कभी किसी विषय पर तर्क–वितर्क होते रहते। प्राय: वे किसी एकान्त स्थान पर ठहरते और प्रकृति का आनंद लेते या कोई गीत गाते। खुले प्राकृतिक वातावरण में खुले गले से निकलते उनके स्वर एक अलग ही अनुभूति देते। वे किसी को सुनाने के लिए नहीं अपने आनंद के लिए गाते। आज सुबोध ने भैया ने गीत गाया **तन समर्पित, मन समर्पित, और यह जीवन समर्पित**। स्वर अत्यंत भावपूर्ण था मानो वे कंठ से नहीं हृदय से गा रहे हों।

घर लौटते हुए भी सुबोध भैया और ताऊ जी गीत पर ही बातें कर रहे थे। आज रविवार था, छुट्टी का दिन इसलिए जल्दी तो किसी को भी थी नहीं, वे आराम से लौटे।

घर आकर, वे आँगन में अमरूद के पेड़ नीचे बिछी खाट पर बैठ गए। घर महानगर की कॉलोनी में था पर घर के कई ठाठ अब भी बिल्कुल देसी थे। यह खाट और दूध दलिया या ऐसा ही कुछ अल्पाहार सब साथ–साथ करते थे।

''सुबोध भैया! आपका गीत कठिन वाला था। 'देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें' गाते तो सरलता से समझ में आता।'' माधव बोला।

''एक ही गीत हमेशा गाएँ क्या? यह तुम्हें याद है अब आज वाला भी सीख लेना।'' भैया ने समझाया।

''बच्चे इतना कठिन गीत गा सकते हैं क्या?'' माधव ने तर्क किया।

''अरे! तुम भारत के बालवीर हो, क्या नहीं कर सकते?'' सुबोध ने प्रोत्साहित किया।

''माधव! सुबोध सही कह रहा है। बच्चे निश्चय कर लें तो बड़ा काम भी सरलता से कर जाते हैं। 'लवकुश, ध्रुव प्रह्लाद बनें हम' प्रतिदिन प्रार्थना में गाते हो न? ये ऐसे ही बच्चे थे जिन्होंने असंभव से दिखने वाले कठिन काम सरलता से कर दिखाए थे।'' ताऊ जी ने दोनों भाइयों के तर्क–वितर्क में सम्मिलित होते हुए कहा।

''हाँ! सुनी हैं मैंने इनकी कहानियाँ, पर ये बहुत पुराने, अलग जमाने की बातें हैं, लव–कुश तो भगवान के बेटे थे और ध्रुव, प्रह्लाद राजाओं के।'' माधव ने कहा।

''और वीर अभिमन्यु? खैर तुम कहोगे यह तो भगवान कृष्ण का भानजा था पर राजकुमारी मैना, पृथ्वीसिंह, हकीकत राय, बिशनसिंह कूका, बाजी राऊत, और भी ऐसे सैकड़ों नाम तो वर्तमान युग के ही हैं जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए, देश–धर्म के लिए अपने बलिदान से दिखा दिया कि शेर के बच्चे छोटे भी हों तो शेर ही होते हैं।'' ताऊ जी कहते–कहते आसमान की ओर देखने लगे, मानो इन सबकी कहानियाँ लिखी हैं वहाँ और वे उन्हें स्पष्ट पढ़ पा रहे हैं। फिर जैसे कुछ याद करते हुए बोले– ''अच्छा चलो! सब जल्दी नहा–धोकर तैयार हो जाओ, आज सब गुरुद्वारे चलेंगे।''

''गुरुद्वारे क्यों? आज न तो गुरु नानक देव जी की जयंती है न गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान दिवस, गुरु गोबिंदसिंह जी का प्रकाश पर्व भी अगले माह है।'' सुबोध ने जिज्ञासापूर्वक पूछा।

''हाँ! पर गुरुद्वारे तो कभी भी जा सकते हैं न? वैसे तो आज भी एक दिन है इसीलिए सबको ले जाना चाहता हूँ। आज है २६ दिसंबर, वीर बाल दिवस। दशम गुरु श्री गोबिंदसिंह जी महाराज के दोनों छोटे

साहबजादे बाबा फतेहसिंह और बाबा जोरावरसिंह के महान बलिदान का दिन।'' कहते-कहते ताऊ जी भावुक हो उठे।

''फतेहसिंह जी बड़े थे या जोरावरसिंह जी?'' सुबोध ने पूछ लिया।

''बड़े तो बाबा जोरावरसिंह जी थे पर मैंने बाबा फतेहसिंह जी का नाम पहले ले लिया। यही सोच रहे हो न? बताऊँगा, आज सब बताऊँगा, पर पहले गुरुद्वारा चलेंगे।'' ताऊ जी से इन वीर बालकों के संबंध में कुछ जानने को मिलेगा यह जानकर दोनों भाइयों में बिजली जैसी फुर्ती आ गई। बहिन रोहिणी और माधव की माँ और ताई जी भी झटपट तैयार हो गईं। गुरुद्वारे जाना हो या जैन मंदिर अथवा बौद्ध विहार वे सपरिवार ही जाते थे। हाँ, आज राघव के पिता किसी काम से नगर से बाहर होने से अवश्य अनुपस्थित थे।

घर में राम, कृष्ण, शिव, गणपति, दुर्गा सबकी पूजा होती पर नानक, बुद्ध, महावीर भी अपने ही आराध्य हैं ऐसा उदार एकात्म हिंदुत्वभाव इस परिवार में सहजता से आ चुका था। वे और कहीं जाते तो प्राय: भोजन घर से बनाकर ले जाते पर गुरुद्वारे में तो लंगर छकने का विशेष ही आनंद होता इसी से महिलाएँ भी फटाफट तैयार हो लीं।

गुरुद्वारे के प्रांगण में ताऊ जी ने सुनाया ''श्री गुरु गोबिंदसिंह जी के चार पुत्र थे। नाम थे अजीतसिंह, जूझारसिंह, जोरावरसिंह और सबसे छोटे फतेहसिंह। श्री गुरु गोबिंदसिंह जी के पिता श्री गुरु तेगबहादुर जी ने तो धर्मरक्षा के लिए बलिदान दिया ही था उनके, अपने चारों बेटों को भी देश धर्म पर सब कुछ न्यौछावर कर देने के संस्कार दिए थे।

ताऊ जी ने कहानी आगे बढ़ाई ''उस समय देश पर क्रूर शासक औरंगजेब का आतंक छाया हुआ था। वह हिन्दुओं का घोर विरोधी था। सिखों की धर्मरक्षक गतिविधियाँ उसे खूब खटकती रहतीं।

बालवीर बाबा फतेहसिंह एवं जोरावरसिंह

छत्रपति शिवाजी महाराज ने उधर दक्षिण में उसके नाको चने चबवा रखे थे। तो श्री गुरु गोबिंदसिंह जी इधर धर्म की अभेद्य ढाल बने हुए थे। दिल्ली में आज जहाँ गुरुद्वारा शीशगंज साहिब है वहीं गुरु तेगबहादुर जी धर्मरक्षा में अपना शीश भेंट चढ़ा चुके थे। लगभग एक वर्ष पहले यानि दिसम्बर १७०४ में ही चमकोर के युद्ध में गुरुजी के दोनों बड़े पुत्र बाबा अजीतसिंह जी और जूझार सिंह जी बलिदान हो चुके थे।

बात सन् १७०५ की है। आनंदपुर साहिब की गढ़ी में गुरु जी सपरिवार अपने साथियों सहित औरंगजेब की सेना से घिरे हुए थे। अन्नभंडार समाप्त हो चुके थे। औरंगजेब ने एक कपटभरा प्रस्ताव दिया कि गुरुजी यदि गढ़ी छोड़ दें तो उनके साथियों सहित सुरक्षित जा सकते हैं। गुरु जी को यहाँ घिरकर भूखे-प्यासे मर जाने की अपेक्षा बाहर निकल कर देशधर्म की रक्षा हेतु उपाय करना ठीक लगा। वे बाहर निकले पर चालबाज दुष्ट औरंगजेब की सेना ने उन पर आक्रमण कर दिया। इस धोखे से हुए आक्रमण से गुरुजी का दल बिखर गया। दोनों छोटे बालक बाबा जोरावरसिंह जी और बाबा फतेहसिंह जी माता गुजरी जी के साथ भटक गए।''

''माता गुजरी कौन थीं?'' इस बार प्रश्न

गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब (सरहिंद)

माधव की माता जी ने किया।

''माता गुजरी गुरुगोबिंदसिंह जी की माँ साहेब, इन बच्चों की ८० वर्ष की दादी थीं और तब जोरावरसिंह की आयु थी नौ वर्ष और फतेहसिंह की मात्र छः-सात वर्ष।'' ताऊ जी ने बताया तो माँ का हाथ अपने आप राघव के सिर पर घूम गया।

ताऊ जी आगे कहने लगे ''दादी पोतों ने एक रसोइये गंगूराम के घर सरहिन्द में शरण ली। वहाँ नवाब वजीर खान शासन करता था। पैसों के लालच में गंगू ने इन दादी-पोतों को पकड़वा दिया। सरहिन्द की गढ़ी के बेहद ठंडे बुर्ज पर दिसम्बर की हाड़ कँपाती भयानक ठंड में यह वृद्ध महिला और छोटे बच्चे बंदी करके रखे गए।''

''यदि तुम इस्लाम कबूर कर लो तो तुम्हारी जान बख्श कर तुम्हें ईनाम भी देंगे।'' उस दिन वजीर खान रौबदार आवाज में कह रहा था। उसके दरबार में दोनों बच्चे अपराधियों के रूप में खड़े किए गए थे।

''हम सिखी नहीं छोड़ेंगे अपना धर्म नहीं छोड़ेंगे।'' सिंह के बच्चों ने निडर उत्तर सुना दिया। विधर्मी औरंगजेब की गुलामी न स्वीकारने के लिए वजीर खान ने सजा सुनाई ''इन गुस्ताख लड़कों को जिन्दा ही दीवार में चुनवा दिया जाए।'' और यह तत्काल किया जाने लगा।

चुनते-चुनते दीवार छोटे-से फतेहसिंह के गले तक आ गई तो उसने देखा बड़े भाई की आँखें छलक उठीं हैं। वह आश्चर्य से पूछ बैठा ''भाई! डर लग रहा है क्या?''

''नहीं रे! हम अपने पिताजी और दादा जी की गौरवशाली परंपरा के बच्चे हैं हम मौत से नहीं डरते मौत हमसे डरती होगी। मेरी आँखें तो यह सोचकर भर आईं कि तुम छोटे हो पर मुझसे पहले तुम देश धर्म पर बलिदान हो रहे हो, ईंटें मेरी श्वासें बाद में रोकेंगी।''

ताऊ जी आँखें पोंछते पलभर रुके! भर्राए गले से शब्द नहीं फूट रहे थे। आँखें सबकी भीग रही थीं। ताऊ जी ने धीरे से कहा- ''अब समझे सुबह मेरे मुँह से फतेहसिंह का नाम पहले क्यों आ गया था। इन्हीं वीर बालकों से प्रेरणा लेने हेतु २६ दिसम्बर को 'वीर बाल दिवस' मनाया जाता है।''

''गुरुपुत्रों की यह पवित्र बलिदान स्थली बाद में हिंदुओं ने प्राप्त करना चाही तो मुगलों ने साफ मना कर दिया। फिर दीवान टोडरमल जी ने मुँह माँगी कीमत देने का लालच दिया तो 'जितनी जमीन सोने की मुहरों से ढँक सको उतनी तुम्हारी' की शर्त पर यह स्वर्ग से भी पवित्र भूमि प्राप्त कर सके। बच्चो! वीर बालकों के पवित्र बलिदान की यह भूमि संसार की सबसे मूल्यवान भूमि है। पंजाब के सरहिन्द नामक स्थान पर गुरुद्वारा फतेहगढ़साहिब आज भी संसार भर का पावन तीर्थ और प्रेरणास्थल बना हुआ है।''

ताऊ जी उठने लगे तो माधव और रोहिणी ने उन्हें उठने न दिया। एक शर्त उनकी भी थी ''आप हमें सरहिन्द अवश्य ले जाएँगे इन्हीं छुट्टियों में।'' ताऊ जी द्वारा मना करने का तो प्रश्न ही न था। 'तन समर्पित, मन समर्पित, और यह जीवन समर्पित' का अर्थ मस्तिष्क में अपने आप स्पष्ट हो रहा है माधव को ऐसा लग रहा था।

- इन्दौर (म. प्र.)

जल का सूत्र

चित्रकथा: देवांशु वत्स

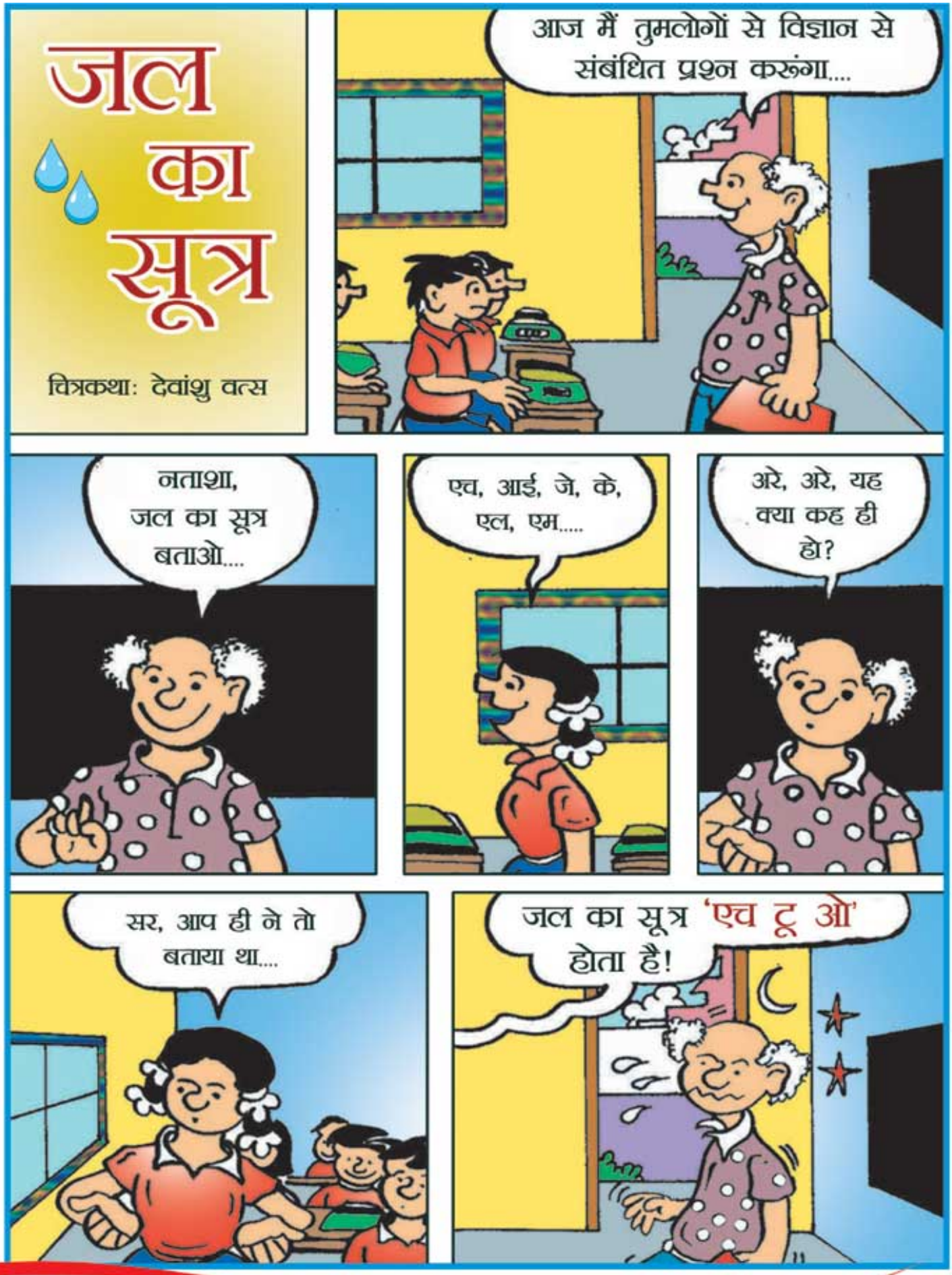

मुख्य सलाहकार गोपाल

– तपेश भौमिक

कुछ दिनों से राज–दरबार में सारे दरबारी नियत समय से न आकर देर से आने लगे थे। पूछ–ताछ करने पर कोई–न–कोई बहाने बनाने लगे थे। अधिकतर दरबारी महाराज से आयु में बड़े थे जिसका लिहाज भी वे करते थे। कई तो उनके पिता के समय से नियुक्त थे। गर्मियों का मौसम था जिसके कारण आलस और बढ़ गया था। महाराज परेशान रहने लगे। उन्हें न कुछ कहते बन रहा था और न कुछ सहते बन रहा था। उनका प्रिय–पात्र गोपाल तो पहले से ही लेट–लतीफ था। इस कारण उन्हें बढ़–चढ़कर कुछ कहते नहीं बन रहा था।

महाराज को चिंतामग्न देखकर महारानी ने चिंता प्रकट की तो उन्होंने बात का खुलासा करते हुए कहा कि मैंने सारे दरबारियों के आलस को दूर करने के लिए बनारस से एक पहलवान को बुलाया है। वे सारे दरबारियों को प्रातःकाल कसरत कराएँगे, जिसेस कि उनमें नई स्फूर्ति आए। तब वे आला नहीं करेंगे और दरबार में समय पर आया करेंगे। इस बात को सुनकर रानी जी ने केवल यह कहा कि क्या उन्होंने गोपाल से इस बारे में सलाह–मशविरा किया था। इस पर महाराज आग बबूला हो गए। उन्होंने कहा कि गोपाल ही सबसे बड़ा लेट–लतीफ है, फिर उससे सलाह कैसी ? महारानी ने इस बात को सुनकर केवल मुस्कुरा दिया और अपने रनिवास में चली गईं।

बनारस से पहलवान आ चुका था। महाराज के आदेश के अनुरूप दूसरे ही दिन सारे दरबारी मैदान में सूर्योदय के साथ–साथ हाजिर हो गए थे। दरबारियों ने अपने इष्ट देव का नाम का जाप करते हुए बदन में सरसों का तेल रगड़ा और लंगोट कस कर रोनी सूरत बनाकर खड़े हो गए। पहलवान को बांग्ला नहीं आती थी तो दरबारियों को हिन्दी। अब बीच में पढ़ा–लिखा न होते हुए भी गोपाल टूटी–फूटी हिन्दी बोल लेता था। समझ तो उसमें इतनी थी कि किसी के चेहरे को भी वह भाँप जाए कि वह क्या कहना चाहता हो। पहले ही दिन डंड–बैठक करते हुए किसी की लंगोट ढीली हो गई तो कोई ऐसे हाँफने लगा कि उसका दम निकला जा रहा हो। गोपाल तो अपने भारी भरकम तोंद के कारण ठीक से बैठ भी नहीं पा रहा था। अब मैदान में दौड़ने की पारी थी तो थोड़ी–थोड़ी दूर पर सारे मुँह के बल गिर पड़े और किसी ने घुटने छिलवाए तो किसी ने नाक मुँह। केवल सेनापति ही सफल रहे।

अगले दिन सारे दरबारी अपने बिस्तर से उठ नहीं पाये। राज वैद्य स्वयं ही सबसे अधिक चोट और दर्द से कराह रहे थे तो फिर उपचार कौन करें ? उधर दरबार में महाराज बाहर–भीतर चहल–कदमी करने लगे थे और रास्ता ताक रहे थे कि कोई अब तो आए। कोई चलने फिरने के योग्य हो तब तो आए। सबके घर प्रहरियों को भेजा गया तो उन्होंने लौटकर सबकी हालत ऐसी बताई कि महाराज अकेले ही ठठा–ठठा

कर पागलों–सा हँसते रहे जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। पहलवान के आगे केवल सेनापति ही टीके रहे। चूँकि महाराज स्वयं व्यायाम के शौकीन थे इसलिए वे और सेनापति केवल इस दिन कुश्ती के दाँव–पेंच सीखते रहे।

उस दिन शाम को महल के छत पर महारानी और महाराज चहल कदमी कर रहे थे। बातों–बातों में महारानी ने दरबारियों के कसरत की बात छोड़ दी। इस पर महाराज ने जो बताया, उसे सुनकर महारानी ने सर पीट ली। उन्होंने केवल यह कहा कि महाराज आप जब भी बिन गोपाल कोई काम करते हैं तो आपको मुँह की खानी पड़ती है। आप तत्काल गोपाल को बुलाकर उनसे सलाह कीजिए। अगले दिन के लिए सारे सभासदों की उपस्थिति अनिवार्य की गई कि वे किसी भी सूरत पर नियत समय से कुछ पहले ही राज दरबार में हाजरी लगाए, अन्यथा उनके विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जाएगी। इधर महाराज रात को ही गोपाल के घर जा पधारे। गोपाल को महाराज के आगमन पर जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। उसे पता था कि अब आयेगा ऊँट पहाड़ के नीचे। महाराज ने गोपाल की हालत देखकर चिंता प्रकट की और मूल समस्या कह सुनाई। गोपाल ने अपनी चिर परिचित मुस्कान बिखेर कर कहा कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। फिर उसने फिसफिसा कर महाराज के कान पर कुछ कहता रहा और महाराज मुँह दबाकर हँसते रहे।

अपने दिन दरबार लगने से पहले ही दरबारियों की कुर्सी में से एक कुर्सी हटा दी गई थी। मंत्री की कुर्सी पर गोपाल ने अपने उत्तरीय को रख छोड़ा था। महाराज दरबार से बाहर गोपाल के साथ चहल–कदमी करते हुए बतिया रहे थे। इतने में महाराज की आज्ञा के अनुसार सारे दरबारी आकर अपने–अपने आसान पर बिराजमान हो गए थे। मंत्री के आते ही महाराज और गोपाल भी आ गए। मंत्री ने अपनी कुर्सी पर गोपाल के उत्तरीय को देखकर कहा, ''महाराज! शायद गोपाल ने गलती से मेरी कुर्सी पर अपनी उत्तरीय को रख छोड़ा है। वह उसे उठा ले ताकि मैं वहाँ बैठ सकूँ। जवाब में महाराज ने कहा कि अब गोपाल मुख्य सलाहकार के रूप में मेरे पास ही बैठा करेगा। आप अब अन्य दरबारियों के साथ बैठा करें। मंत्री का चेहरा यह सुनते ही पीला पड़ गया। उसने पूरे दरबार में नजर दौड़ाई तो देखा एक भी कुर्सी खाली पड़ी नहीं है। महाराज ने मंत्री के चेहरे को भाँप लिया और कहा, अब से दरबार में अंत में आने वाले को खड़ा रहना पड़ेगा। किसी के लिए भी कोई कुर्सी निश्चित नहीं है।

अब अगले ही दिन से इस नियम को कड़ाई से लागू कर दिया गया। सारे दरबारी नियत समय से पहले दौड़ते हुए या जोर कदमों से चल कर आने लगे और अंत में आने वाले को खड़ा रहना पड़ने लगा। इस प्रकार शारीरिक व्यायाम भी होने लगा और दरबार में नियत समय से पहले दरबारी आने भी लगे। अब चूँकि गोपाल ने नियम बनाए थे तो उसकी लेट लतीफी भी समाप्त हो गई।

– कूचबिहार (पं. बंगाल)

चित्र पहेली

रंग भरो

– चाँद मोहम्मद घोसी

निम्नांकित संकेतानुसार विभिन्न खानों में रंग भरकर देखो कौन सा जंतु जल क्रीड़ा करके तैरता हुआ जा रहा है?

संकेत:– ● केसरिया ★ नीला
+ पीला ▲ भूरा

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

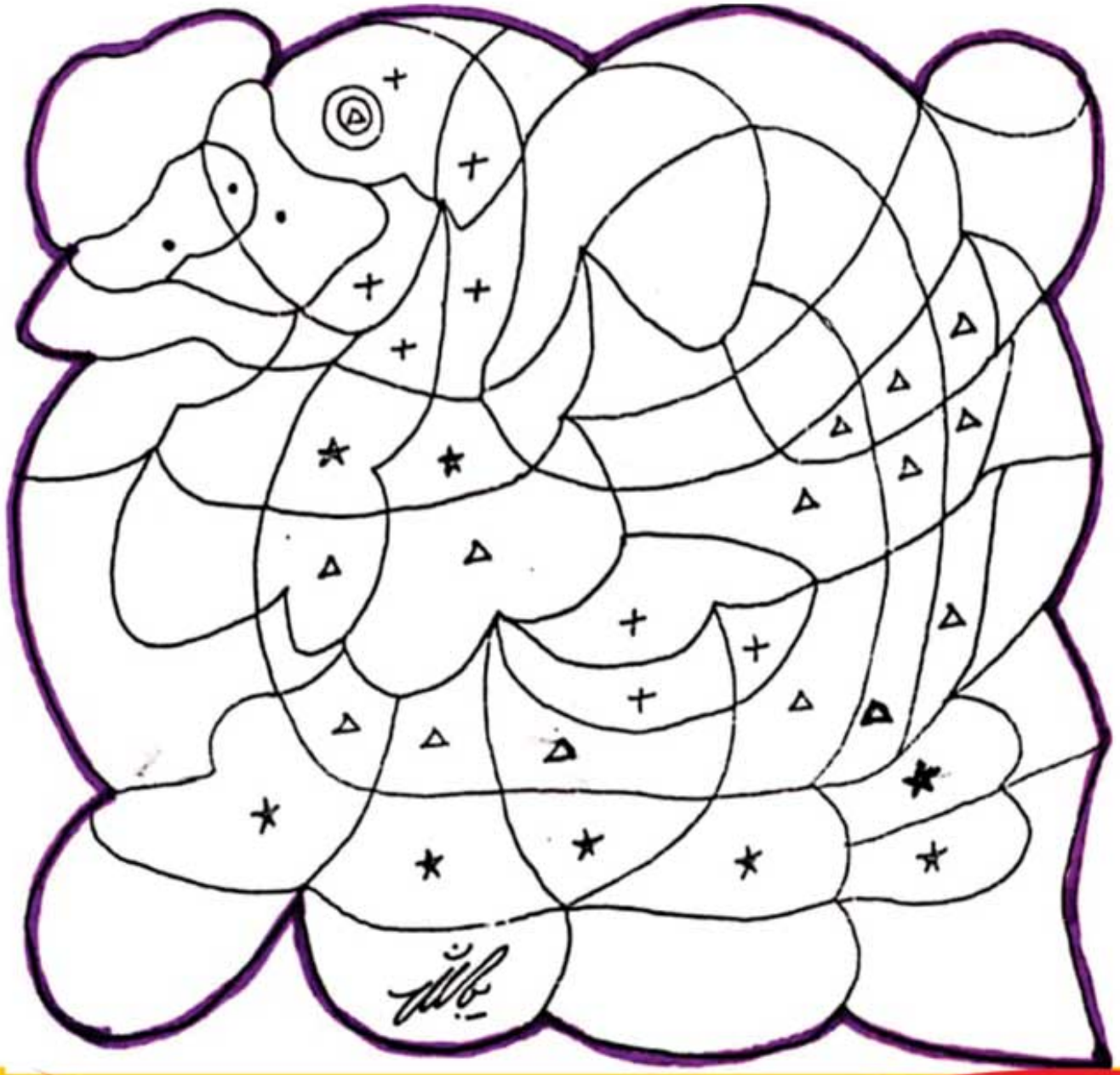

पुस्तक परिचय

श्री उमेश कुमार चौरसिया राजस्थान की वीर धरा के श्रेष्ठ साहित्य सर्जकों में एक सम्मानित हस्ताक्षर हैं। साहित्य की विविध विधाओं में अनेक कृतियाँ प्रदान करते हुए आपने बच्चों के लिए भी कई पुस्तकें लिखी हैं। यहाँ प्रस्तुत हैं उनकी कुछ नाट्य विधा की प्रमुख पुस्तकों का एक परिचय।

साहित्यागार धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।

ओ अहल्या व एकलव्य
मूल्य २००/-

रामायण की अमर पात्र अहल्या एवं महाभारत के प्रसिद्ध पात्र गुरुभक्त एकलव्य पर केन्द्रित दो मंचन योग्य नाटक।

इदं राष्ट्राय
मूल्य २००/-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधव सदाशिवराव गोलवलकर राष्ट्रीयता से ओतप्रोत प्रेरक जीवन चरित्र पर केन्द्रित नाटक।

साहित्य चंद्रिका प्रकाशन- २४ न्यू पिंक सिटी मार्केट, सिद्धेश्वर मंदिर के पीछे, पंचवटी राजापार्क, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।

शौर्य प्रधान नाटक
मूल्य २००/-

भारतीय इतिहास में शौर्य एवं बलिदान के ज्वाजल्यमान नक्षत्र वीरवर पृथ्वीराज चौहान, माता पन्नाधाय, महारानी लक्ष्मीबाई, सिन्धुवीर दाहर सेन, और राजा बख्तावरसिंह की अमर गाथाओं पर जीवंत नाटक।

विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी, विवेकानंद केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग 'योगक्षेम' गीताभवन, जोधपुर-०३ (राजस्थान) से प्रकाशित।

लक्ष्य की ओर
मूल्य ९०/-

भारतीय गौरवमयी इतिहास से ग्यारह महापुरुषों पर लघु बाल नाटकों का संग्रह।

साहित्यागार धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.) से प्रकाशित

ऐतिहासिक बाल एकांकी
मूल्य २०/-

भारतीय इतिहास के अनेक बालवीरों जैसे वीर दुद्धा, देशभक्त पुत्त, जीरापुर का बाल राजा, वीर मालोजी, की साहस व वीरता को बताते ४ बाल एकांकी।

परिवर्तन

– मधु गोयल

कक्षा में व्याख्यान के समय जब अध्यापिका 'शिखा' ने श्रेया और मेघा को बात करते हुए देखा तो उन्हें अच्छा नहीं लगा। अध्यापिका बच्चों से बहुत प्रेम से बात करती थीं, वह आशा रखती थीं कि प्रत्येक बच्चा अपने गुरु का सम्मान करे, अनुशासन में रहे, कक्षा में संयम रखे, और वर्णन के समय उनका व्याख्यान ध्यान से सुने।

श्रेया और मेघा को अध्यापिका ने कहा– ''कृपया आप दोनों चुप बैठें।'' वह दोनों अध्यापिका की आवाज सुनकर, एक बार को चुप हो गईं, किन्तु कुछ समय बाद नीची गर्दन कर धीरे–धीरे फुसफुसा कर बातें करनी शुरू कर दी। अध्यापिका ने यह देखा कि उनके कहे का उन्हें कोई असर नहीं हुआ, तो दोनों पर नाराजगी प्रकट की और कहा– ''मेरा कहा आपको समझ नहीं आया, यदि इसी समय बातें करनी हैं तो कक्षा से बाहर जाकर करें, मेरी कक्षा में व्याख्यान के समय कोई भी विद्यार्थी आपस में बात नहीं करेगा समझ आया।''

दोनों ने कहा– ''आगे से ऐसा नहीं होगा... दीदी?''

''ठीक है... आगे से इस बात का विशेष ध्यान रखें। यह गलती दोबारा न हो।''

''जी दीदी! हम इस बात का ध्यान रखेंगे।''

श्रेया और मेघा, उदंड प्रवृत्ति की लड़कियाँ थीं, अधिकांश अपनी कक्षा के साथी बच्चों को पहले परेशान करती थीं, फिर उन्हें परेशान देखकर हँस–हँसकर तालियाँ बजाती थीं। कभी किसी बच्चे की कुर्सी पर स्याही छिड़क देना, उस बच्चे के बैठने पर कपड़े गंदे होना, कभी किसी का टिफिन निकालकर खाना खा जाना, और तो और एक बच्चे के बस्ते से कॉपी निकाल कर दूसरे बच्चे के बस्ते में रख देना, उस बच्चे को कॉपी ढूँढ़ने पर हँसना, यह प्रतिदिन की बातें थी। ऐसा नहीं था कि उन्हें डाँट ना पड़ती हो... जब अध्यापिका को इन बातों का पता चलता तो डाँट भी पड़ती थी, लेकिन फिर भी वह दोनों अपनी हरकतों से बाज नहीं आती थीं। उन्हें ऐसा करने में बहुत आनंद आता था, जैसे उन्हें बहुत शांति मिलता हो। उन दोनों का कहना होता था कि जब तक जीवन में कुछ 'मनोरंजन' ना हो तब तक जीवन जीने का आनन्द ही क्या?

दोनों ने फिर योजना बनाई कि आज कुछ नया करते हैं चलो अब की बार 'शिवांगी और अस्तित्व' को मूर्ख बनाते हैं। दोनों ने मिलकर अस्तित्व की तरफ से पत्र लिखा। उसमें लिखा शिवांगी, ''क्या तुम मुझसे मित्रता करोगी? यदि हाँ तो मुझसे गोल मेज के पास मिलो।''

यह पत्र अपनी मित्र जहान्वी को देने के लिए

कहा। जान्हवी जान चुकी थी कि ''श्रेया और मेघा'' के दिमाग में फिर कुछ चल रहा है, जो कि गलत है। उसे यह बात ठीक नहीं लगी और वह पत्र अध्यापिका के पास पहुँचा दिया। यह देखकर अध्यापिका को बहुत क्रोध आया लेकिन यह सोच क्रोध से बात नहीं बनेगी और मेघा और श्रेया को अपने कार्यालय में बुलाया।

दोनों डरते-डरते कार्यालय पहुँची....., सोचने लगी, ''कहीं वह पत्र जान्हवी ने अध्यापिका को तो नहीं दे दिया?'' यदि ऐसा हुआ तो हम जान्हवी को छोड़ेंगे नहीं, और घबराते हुए बोलीं- ''दीदी! क्षमा कर दीजिए, आगे से ऐसी गलती नहीं होगी।''

''अरे.... कौन सी गलती....? बच्चो!.... मैंने तो ऐसा कुछ कहा ही नहीं, अध्यापिका ने अपने आपको शांत रखते हुए कहा- ''आप दोनों प्रतिदिन एक नई शैतानी करती हैं, मैं तो बस आज की शैतानी

क्या है जानना चाह रही थी?'' बताओ आज क्या योजना है तुम्हारी?''

''दीदी! कुछ नहीं।'' कह दोनों एक-दूसरे का मुँह तकने लगीं।

अध्यापिका ने कहा- ''अच्छा ठीक है कक्षा में आकर बात करती हूँ, आप दोनों कक्षा में जाइए।''

कक्षा में आने पर अध्यापिका ने दोनों को अपने पास बुलाकर कहा- ''आप अच्छे बच्चे हैं, आपकी शैतानियाँ आपके प्रतिभा पर पानी फेर देती हैं। गुरु चाहता है कि विद्यार्थी उनकी आशाओं पर खरा उतरे! आगे चलकर विद्यालय का, अपने गुरु का और अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करे। स्वामी विवेकानंद जी के बारे में आपने अपनी पुस्तक में पढ़ा ही होगा, वह बचपन में बहुत नटखट थे, लेकिन उन्होंने शैतानियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उनका कहना था जैसा हम सोचेंगे वैसा ही बनेंगे इसलिए अच्छा सोचो अच्छा बनो। हम जैसा बोते हैं वही काटते हैं हम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हैं। क्या आप दोनों को अपनी प्रशंसा सुनना अच्छा नहीं लगता... बोलो?''

''हर बच्चा अपनी प्रशंसा सुनना चाहता है। लेकिन दीदी! जीवन में मनोरंजन हो... तभी तो जीवन जीने का आनन्द है....।'' मेघा ने कहा।

''दूसरों को परेशान कर और स्वयं खुशी अनुभव करना क्या यही तुम्हारे लिए 'मनोरंजन' है और जिनको परेशान करती हो उनके लिए... क्या? वह भी तो कुछ 'मनोरंजन' चाहते होंगे ना?

आप दोनों सीमा से बाहर जा रही हो, यह मत समझो कि मुझे कुछ पता नहीं चलेगा? मैं सब जानती हूँ हर बच्चे के बारे में जानती हूँ। मैं आपकी किसी भी ऐसी बात से समझौता नहीं करूँगी। आप दोनों को समझना होगा कि मैं क्या चाहती हूँ? आप दोनों बताइए मैं क्या करूँ आपके साथ? क्या दण्ड दूँ आपको? सजा पाकर, आप दोनों को अच्छा लगेगा,

जो आप कर रही हैं? इन सब बातों का असर बाकी बच्चों पर भी पड़ता है। कक्षा का वातावरण खराब होता है वो अलग। समझ रही हो... मैं क्या चाह रही हूँ?''

फिर वे गंभीर सोच में डूबते हुए कुछ रुकीं और बोलीं ''अरे विद्यालय से ही देश का भविष्य निकलता है।'' श्रेया और मेघा गर्दन झुकाए, चुप खड़ी सुनती रही। उत्तर ना मिलने पर अध्यापिका दीदी! ने कहा– ''बहुत हो गया.... अब जो मैं कह रही हूँ वैसा करो, कल से आप दोनों एक साथ नहीं बैठेगीं। श्रेया आप आगे बैठोगी और मेघा पीछे की बैंच पर बैठेगी, समझ आया!''

''जी दीदी! हम प्रयत्न करेंगे हम आपको शिकायत का अवसर नहीं देंगे।''

''हाँ यह हुई ना बात... गुरु चाहता है कि विद्यार्थी उसकी आशाओं पर खरा उतरे। एक बात और... अब कक्षा की जिम्मेदारी भी तुम दोनों की है, कोई भी बच्चा किसी को किसी भी तरह, परेशान नहीं करेगा, कक्षा में सब बच्चे संयम से रहेंगे, यदि कोई तुम्हारी बात नहीं मानता है तो मुझे शिकायत करना होगा, ठीक है।''

''जी दीदी!'' ''अपना स्थान ग्रहण करो।''

श्रेया और मेघा एक दूसरे को देख मुस्कुरा दी, और ऐसा लग रहा था जैसे कि इशारो–इशारो में कह रही हों, 'बच गए आज।'

अध्यापिका दीदी! दिन पर दिन देख रहीं थीं कि, उत्तरदायित्व मिलते ही दोनों लड़कियों में सुधार आने लगा, वह दोनों किसी को भी किसी तरह से तंग नहीं कर रहीं थीं। कोई भी परेशानी होती तो दूर करने का प्रयत्न करतीं। अब सब विद्यार्थी प्रसन्न थे। कक्षा का वातावरण दिन पर दिन अच्छा हो रहा था।

अध्यापिका को श्रेया और मेघा दोनों में यह 'परिवर्तन' देखकर बहुत अच्छा लगा, सोचने लगी, बच्चों पर डाँट का असर नहीं होता, प्यार से समझाने का परिणाम होता है, हम अपने प्यार से बच्चों को सुधार सकते हैं। बच्चों पर जोर जबरदस्ती करने से वह उल्टा ही चलते हैं।

दीदी ने श्रेया और मेघा से कक्षा की जानकारी माँगी। दोनों ने हँसते हुए कहा... ''सब ठीक है दीदी! जो आपकी शिक्षा में रहेगा कभी गलत हो ही नहीं सकता।''

– गाजियाबाद (उ. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

पति व पत्नी एक रेस्टोरेंट में बैठे हुए कॉफी पी रहे थे। पत्नी–कॉफी जल्दी पी लो, नहीं तो ठंडी हो जाएगी।

पति– क्यों?

पत्नी– मीनू में लिखा है गर्म कॉफी १० रुपये और कोल्ड कॉफी २५ रुपये।

*****

अध्यापक (छात्र से)– दस बच्चे विद्यालय की पहली मंजिल पर हैं और पचास बच्चे नीचे के एक कमरे में तथा दूसरे कमरे में बीस बच्चे हैं तो बताओ, कुल कितने बच्चे हुए?

छात्र– जी एक बटा पचास धन बीस।

*****

मरीज (डॉक्टर से)– मैं तो बिल्कुल ठीक हो गया हूँ, आप क्यों चिंतित हैं?

डॉक्टर– दरअसल मुझे यह मालूम नहीं है कि तुम किस दवा से ठीक हुए।

*****

रमेश (सुरेश से)– मेरे पास समय बिताने के लिए फेसबुक है, ट्विटर है, वॉट्सएप है, इंस्टाग्राम है, तुम्हारे पास क्या है?

सुरेश– मेरे पास काम धंधा है।

नमूना

चित्रकथा-

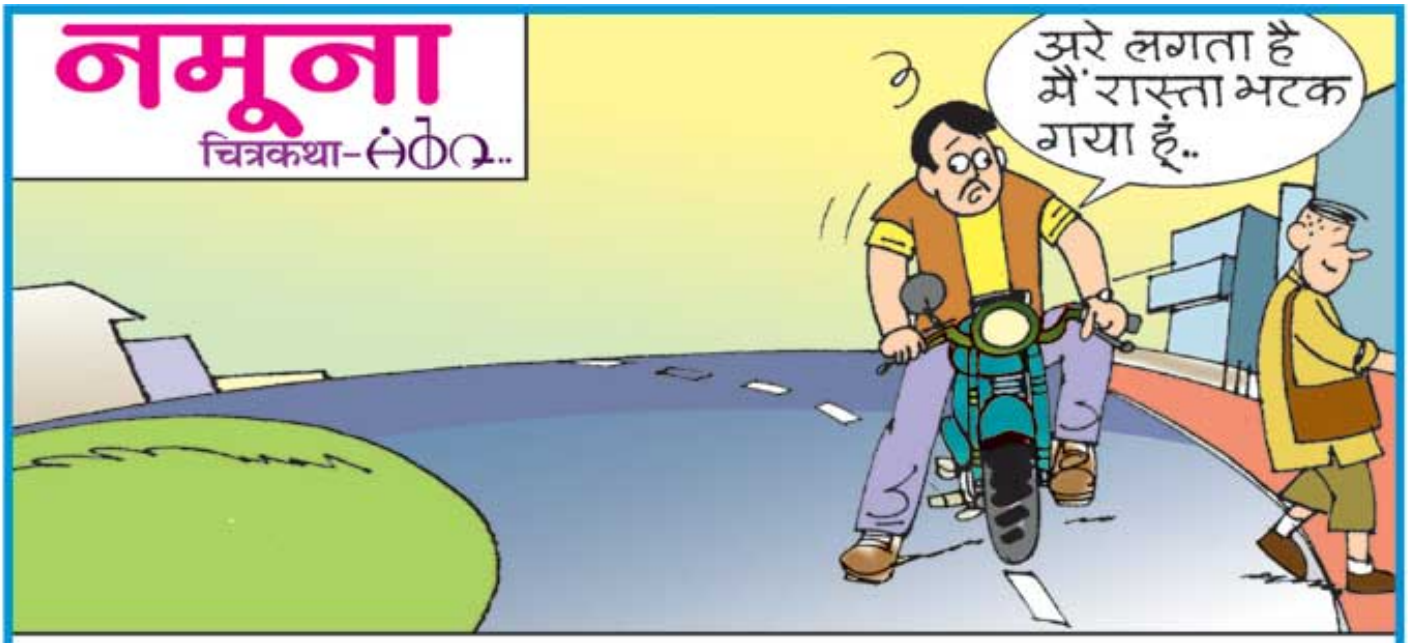
अरे लगता है मैं रास्ता भटक गया हूं..

ओए नमूने, ये आगरा जाने का रास्ता कौनसा है?

तुम्हें कैसे पता चला मेरा नाम नमूना है.?

बस मैंने यूं ही अंदाजा लगा लिया..

तो अक्ल के दुश्मन रास्ता जानने के लिए यूं ही अंदाजा क्यों नहीं लगा लेता.?

संकल्प

– डॉ. सतीश चन्द्र भगत

संकल्प की माँ सुभद्रा ने कहा– ''उठो बेटा! सुबह हो गई। सूरज निकलने वाला है। पूरब में लालिमा छा गई। देखो! देखो चिड़िया भी चहचहाने लगी हैं।''

आलस्य से भरा संकल्प कुनमुनाता हुआ बोला– ''ओहो माँ! बहुत अच्छी नींद आ रही है। थोड़ा और सोने दो ना।'' और वह चादर ओढ़कर औंधे मुँह सो गया।

सूर्योदय हो गया। सुभद्रा घर के कामों में व्यस्त हो जाती है। संकल्प के पिता संतोष अपने कार्यालय जाने की तैयारी में हैं। लेकिन, संकल्प अभी भी आलस्य के कारण सुस्ती के भाव से बिछावन छोड़कर अपने दैनिक कार्य में लगा ही था। जल्दी–जल्दी सुभद्रा संकल्प को शाला जाने के लिए तैयार करती इतने में शाला की बस हॉर्न देती हुई उसके घर के सामने रुकी।

सुभद्रा संकल्प को बस पर बैठा देती है। शिशु विद्यालय, दरभंगा के मुख्य गेट पर शाला बस रुकती है। सभी बच्चों के साथ संकल्प भी अपनी कक्षा में जाता है।

प्रार्थना के बाद चेतना सत्र में विद्यालय के शारीरिक शिक्षक बच्चों से कहते हैं, ''प्रात: आप सभी बच्चों को आलस्य को त्याग कर जागरूक मुद्रा बनाते हुए खुली हवा में टहलना चाहिए।''

संकल्प ने प्रश्न किया– ''ऐसा क्यों?''

शारीरिक शिक्षक ने उत्तर दिया– ''जो बच्चा अपने माता–पिता के जगाने से पहले ही जगता है। उठकर ईश्वर का ध्यान करते हुए बड़ों से आशीर्वाद प्राप्त करता है, हाथ की रेखाओं को देखता है, वह बच्चा जागरूक नागरिक बनता है।''

आगे शिक्षक ने कहा कि जो बच्चे कम से कम दस मिनट भी व्यायाम कर दिनचर्या के अनुसार काम में लग जाते हैं, वैसे को जीवन विज्ञान के अनुसार जागरूक मुद्रा वाले बच्चे कहे जाते हैं। और बच्चे जैसी मुद्रा बनाते हैं, वैसा ही उनमें भाव बनने लगता है।

''ठीक है सर! अब मुझे भी समझ में आई कि मेरी माँ सूर्योदय से पहले ही मुझे क्यों जगाने लगती हैं।'' संकल्प बोला।

अगले दिन से संकल्प ने संकल्प लिया कि मैं भी सुबह–सबेरे चिड़ियों के चहचहाते ही उठकर सभी काम करूँगा। ईश्वर का स्मरण करते हुए अपनी माँ के साथ घर में सभी बड़ों से आशीर्वाद लेकर अपने काम में लग जाऊँगा।

अब संकल्प भी अपनी आदत में बदलाव लाते हुए सूरज के उगने से पहले जगने लगा।

अपने घर में माँ–पिता जी और बड़ों को हाथ

जोड़कर अपना शीश झुकाने लगा। सभी से नम्रता पूर्वक बातें करने लगा। पढ़ने में भी संकल्प को खूब मन लगने लगा। वह सही आसन में बैठकर अपनी पुस्तक पढ़ता। धीरे-धीरे उसकी एकाग्रता और ज्ञानार्जन के भावों की सही मुद्रा बनने लगी।

अगले दिन विज्ञान के शिक्षक ने बताया कि जो बच्चे सही मुद्रा में नहीं पढ़ते हैं, उसे पाठ याद करने में अधिक समय लगता है।

संकल्प ने अपने विज्ञान शिक्षक से पूछा- ''आचार्य जी! इसका क्या कारण है?''

उन्होंने कहा- ''सही मुद्रा में पाठ पढ़ने वाले बच्चे एक घंटे में याद होने वाले पाठ को आधे घंटे में याद कर सकते हैं।''

''क्योंकि, सही मुद्रा से सजगता और कुशलता बढ़ जाती है। यदि बच्चे पीठ के बल सोये-सोये पुस्तक पढ़ेंगे तो उसका चित्त पुस्तक पर पूर्ण एकाग्र नहीं हो पाएगा। आँखों से पुस्तक को दूर रखने के लिए हाथों को ऊपर उठाकर रखने से पुस्तक पर प्रकाश भी कम पड़ता है। आँखों पर सीधा प्रकाश पड़ने से खराब होने का भी डर है। और यह पढ़ने की सही मुद्रा भी नहीं है। इस प्रकार से पढ़ने में मन भी नहीं लगता है। संकल्प शक्ति और सही मुद्रा के द्वारा ही इसे ठीक किया जा सकता है।''

''बिलकुल सही बात है आचार्य जी!''

अगले दिन से संकल्प भी सही मुद्रा में पढ़ने लगा। संकल्प के माता-पिता ऐसा परिवर्तन देखकर बहुत प्रसन्न थे।

अब संकल्प अपनी कक्षा का सबसे तेज छात्र था और उसका स्वास्थ्य भी अच्छा था।

सुभद्रा और संतोष अपने बेटे में ऐसा परिवर्तन देखकर कहने लगे- ''यदि शिक्षक सही हो तो निश्चित ही बच्चों को सही शिक्षा से उसकी आदतें सुधार सकते हैं। केवल किताबी शिक्षा ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक शिक्षा से बच्चों में समुचित विकास किया जा सकता है।''

- दरभंगा (बिहार)

राजकुमारों की परीक्षा

- मोहनलाल जोशी

द्रोणाचार्य जी ने राजकुमारों की परीक्षा ली। उन्होंने एक बहुत ऊँचे पेड़ पर चिड़िया बैठायी। युधिष्ठिर को कहा- ''चिड़िया की आँख को लक्ष्य बनाकर तीर चलाना है। तुम्हें पेड़ दिख रहा है।'' युधिष्ठिर ने कहा- ''हाँ।''

गुरु ने युधिष्ठिर से धनुष ले लिया।

उन्होंने भीम, नकुल, सहदेव, दुर्योधन आदि सभी से यही प्रश्न किया। सभी ने कहा- ''मुझे पेड़ दिख रहा है। पेड़ पर बैठी चिड़िया दिख रही है। उसकी आँख दिख रही है।''

गुरु द्रोणाचार्य ने सभी को हटा दिया। अर्जुन की बारी आई। उसने कहा- ''मुझे पेड़ नहीं दिख रहा। चिड़िया भी नहीं दिख रही। केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।''

गुरु प्रसन्न हो गये। जिसे केवल अपना लक्ष्य दिखता है, वही सफल होता है। अर्जुन सफल हो गया।

- बाड़मेर (राजस्थान)

इस तरह बनाओ

चिड़िया-घोंसला

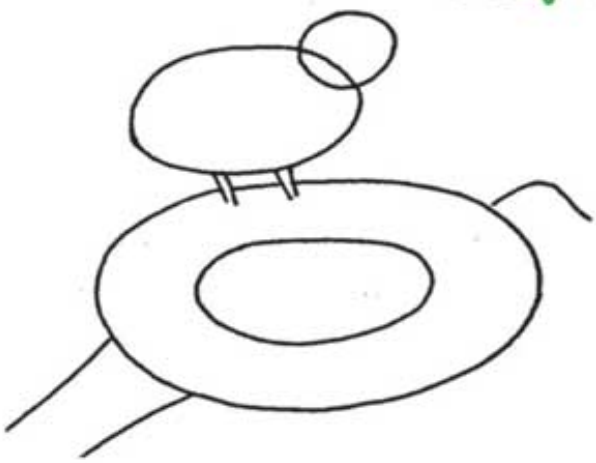

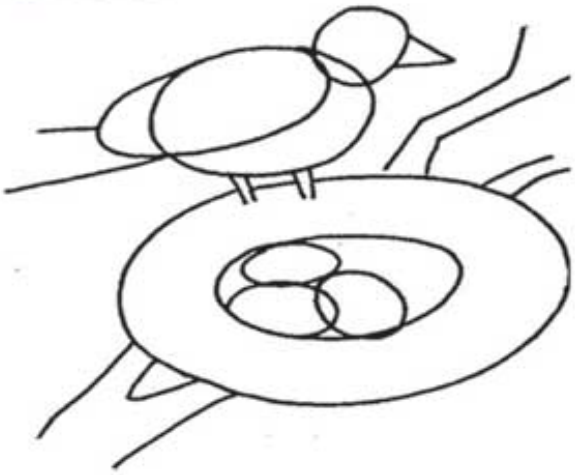

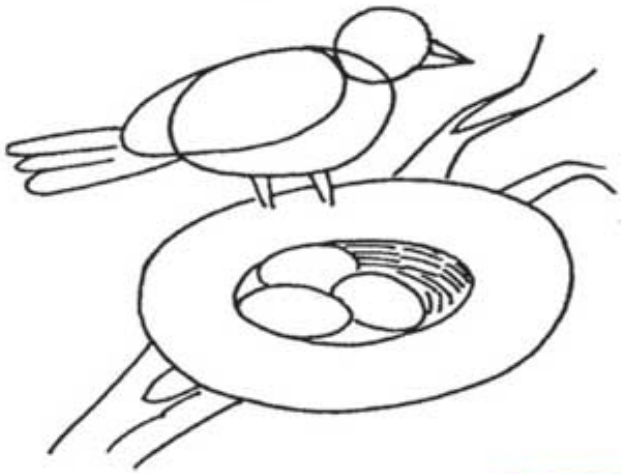

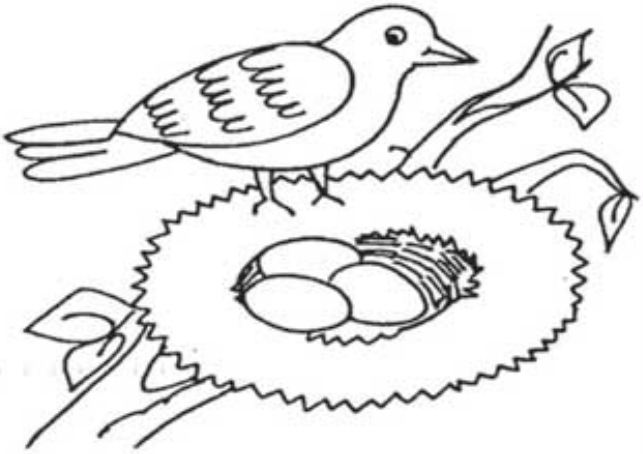

रेखागणित पहेलियाँ

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

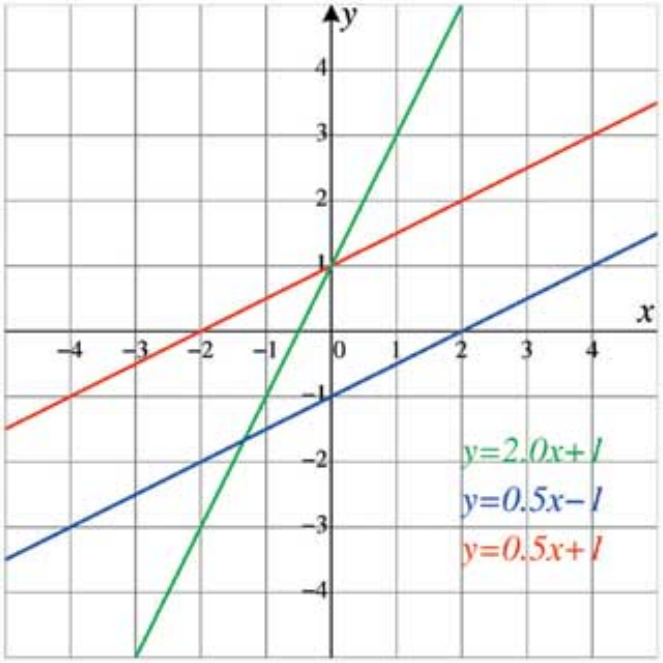

(१)

बिंदु–बिंदु से बनती हूँ।
सीधे–तिरछा चलती हूँ।।
मैं अनंत तक जा सकती।
चलकर कभी नहीं थकती।।

(२)

तीन भुजाएँ, कोने तीन।
कौन–सी आकृति, प्रश्न महीन।।

(३)

रहो घूमते चारों ओर।
जिसका मिलता ओर न छोर।
आकृति बनती बिल्कुल गोल।
क्या कहते, बच्चो! दो बोल।।

(४)

चार भुजाएँ, नाप समान।
नब्बे अंश हर कोण का मान।
घिरी आकृति देती ज्ञान।
नाम बताओ, लो पहचान।।

(५)

आमने–सामने भुजा समान।
बना चतुर्भुज, लो पहचान।।

(६)

दो रेखाएँ बढ़ती जातीं,
जिनके बीच समान है दूरी।
जैसे होतीं रेल पटरियाँ,
क्या कहलातीं, ध्यान जरूरी।।

(७)

आड़ी–तिरछी सी रेखाएँ,
कोई आकृति नहीं बनाएँ।
यों ही जहाँ–तहाँ दो खींच,
नाम बताओ, आँखें मींच।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

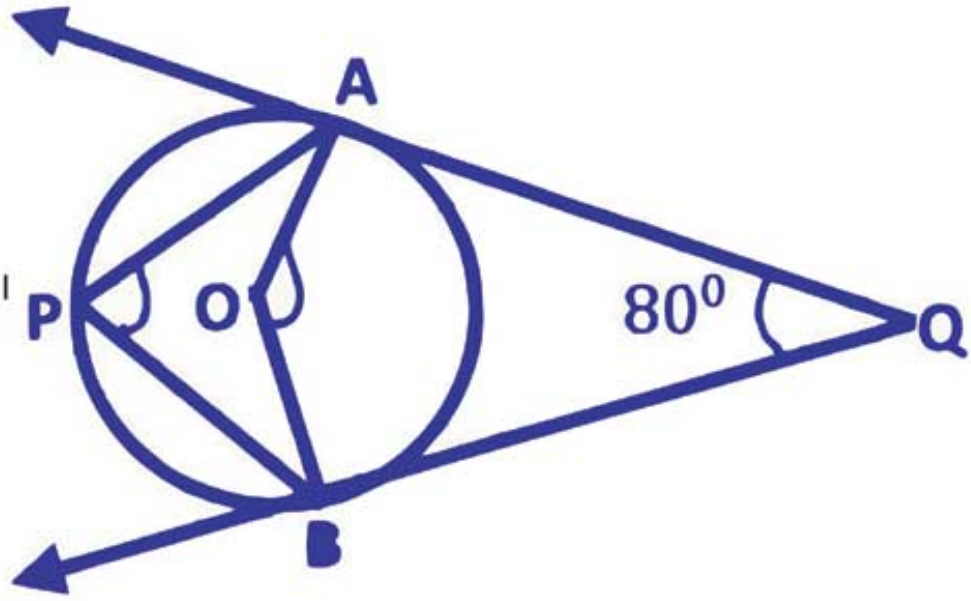

उत्तर १) रेखा, २) त्रिभुज, ३) वृत्त ४) वर्ग, ५) आयत, ६) समान्तर रेखाएँ, ७) तिर्यक रेखाएँ।

चिप्स की कीमत

– उषा सोमानी

शाम का समय था। बच्चे, माँ–पिता जी और दादा–दादी के साथ उद्यान में खेलने आये। रंग–बिरंगी तितलियों की तरह बच्चों से उद्यान की शोभा बढ़ गई। सुयश भी शाला से लौटकर, अपने बाबा के पास उद्यान के बाहर बैठ गया। उसके बाबा जूतों को पॉलिश और मरम्मत का काम करते थे। सुयश से बाबा बोले– ''बेटा! तुम पढ़ाई में ध्यान दो।''

सुयश हँसकर बोला– ''बाबा! माँ कहती हैं, यहाँ–बड़े लोगों को देखने और बातचीत करने को मिलता है। आपको घर आते–आते अँधेरा हो जाता है। आप पूरा दिन काम करते हैं। मैं आपका हाथ बँटाऊँ?''

उसकी बात पर बाबा धीरे से मुस्करा दिये और उसे प्यार करने लगे, ''बेटा! मेरी इच्छा है कि तुम पढ़–लिखकर बड़े आदमी बनो।''

सुयश बाबा के काम में हाथ बँटा रहा था, तभी उसका ध्यान उद्यान के बाहर एक बूढ़ी औरत की तरफ गया। वह एक टोकरे में रखे स्नेक्स, चिप्स और बिस्किट के पैकेट बेच रही थी। सुयश ने बाबा से पूछा, ''बाबा! यह काकी कौन है? यहाँ पहले तो नहीं देखा।''

बाबा ने एक लंबी साँस ली। वह बोले– ''हाँ बेटा! बड़ी दुखी है। एक बीमारी ने बेटा–बहू छीन लिया। यहाँ पास वाली सोसायटी में दिन भर लोगों के घरों में काम करती हैं। शाम को स्नेक्स बेचकर अपना और अपने दो पोते–पोती का पेट भरती है। रोज तो तुम्हारे आने से पहले लौट जाती हैं, परंतु आज देर तक रुकी हैं।''

सुयश अपना काम करते हुए बार–बार काकी को देख रहा था। सुयश को यह देखकर तसल्ली थी कि बच्चे उनसे चिप्स, बिस्किट और चॉकलेट खरीद रहे थे। वह पैसे अपने कमर में बँधे पल्लू में बड़े जतन से रख रही थी। सूर्यास्त होने वाला था। आकाश में पक्षी चहचहा रहे थे। वे दिन भर उड़ते–फिरते, दाना–दुनका चुगकर अपने घरों को लौट रहे थे। सुयश ने अपनी कॉपी–किताबें बंद कर, उन्हें बस्ते में व्यवस्थित रखा। उसने देखा, दो लड़के काकी से बातें कर रहे थे। उनमें से एक लड़के ने काकी को बातों में उलझाया और दूसरे लड़के ने काकी के टोकरे से चिप्स और बिस्किट के पैकेट चुराकर अपने टी शर्ट में छिपा लिए। फिर वे रवाना हो गए। सुयश यह देखकर दुखी हो गया। वह भागकर काकी के पास गया और बोला– ''काकी! इन दोनों लड़कों ने आपकी आँखों में धूल झोंकी है। आपको बातों में उलझाकर, आपकी टोकरी से चिप्स और बिस्किट के पैकेट चुराए हैं।''

काकी दौड़कर लड़कों के पीछे गई और पैसे देने के लिए बोला। दोनों लड़के काकी से झगड़ा करने लगे। उनमें से एक बोला– ''कौन से पैसे? हमने कोई सामान नहीं लिया। पैसे पेड़ पर उगते हैं क्या? फालतू

की लूट मचा रखी है। हमारे पास तुम्हारा कोई सामान नहीं है।''

काकी और उनके बीच बहस होने लगी। वहाँ पर धीरे-धीरे भीड़ जमा हो गई। तभी उस भीड़ से एक सज्जन आगे आए। उन्होंने काकी से पूरी घटना की जानकारी ली, फिर उन्होंने लड़कों को सामान लौटाने के लिए कहा। भीड़ को देखकर, दोनों लड़के घबरा गए और वहाँ से भागने का प्रयत्न करने लगे। तभी उन सज्जन ने उन्हें पकड़कर, उनकी तलाशी ली। तब चुराए हुए चिप्स और बिस्किट के पैकेट मिल गए। उन सज्जन ने पैकेट काकी को लौटाए और दोनों लड़कों को समझाया- ''तुम पढ़े-लिखे हो, हष्ट-पुष्ट हो। तुम्हें जरूरतमंद की सहायता करनी चाहिए। बहादुर बच्चे चोरी नहीं करते। दूसरों की आँख में धूल झोंकना अच्छी बात नहीं है। तुम तो मेरे देश का भविष्य हो। तुम जैस होनहार बच्चों से ही आने वाला कल है। मेरे शेरो! यह सिर कभी भी शर्म से न झुके। हमेशा शान से तनकर खड़े होना।'' उन्होंने प्यार से दोनों लड़कों को अपने से लिपटा लिया। दोनों लड़कों की आँखें पश्चाताप के आँसू से छलछला गईं।

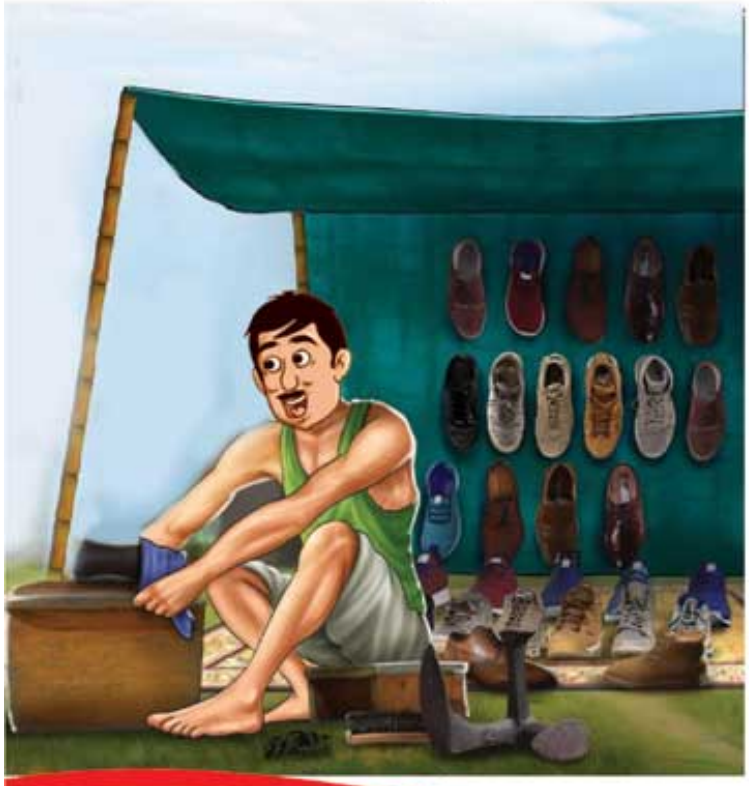

दोनों लड़कों ने काकी से क्षमा माँगी। काकी अपना सामान लेकर टोकरे के पास आई और सुयश को प्यार करते हुए बोलीं- ''बेटा! तुम बड़े अच्छे मन वाले मनुष्य हो। आज तुमने नुकसान से बचा लिया।'' उन्होंने एक चिप्स का पैकेट सुयश की ओर बढ़ा दिया।

सुयश चिप्स का पैकेट लौटाते हुए बोला- ''काकी! मुझे जब भी चिप्स खाने होंगे, मैं वादा करता हूँ। आपसे ही खरीद कर खाऊँगा।''

काकी बोलीं- ''आज उपहार में दे रही हूँ। कल खरीद कर खाना।''

सुयश मुस्कराकर बोला- ''काकी! अँधेरा होने वाला है। आपको घर तक छोड़ देता हूँ। आप मुझे यह टोकरा उठाने देंगी तो मैं खुशी-खुशी से चिप्स का पैकेट ले लूँगा।''

काकी मुस्कुराने लगी और उन्होंने सुयश को टोकरा उठाने में सहायता की। वे दोनों बातें करते हुए घर की ओर चल दिए।

- चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

विद्यार्थी के पाँच गुण

जैसे कुत्ता जरा हो आहट, नींद छोड़ जग जाता है।
बगुले सा पढ़ने-लिखने में, ध्यान अचल लग जाता है।।
कौए जैसा बार-बार, जिसका प्रयास कुछ पाने को।
रहे न आलस मिले ऊर्जा, ऐसा थोड़ा खाने को।।
थोड़ा खर्चा अधिक पढ़ाई, विद्या रोज कमाता है।
ऐसे गुण जिसमें विद्यार्थी, अच्छा वही कहाता है।।

राष्ट्रीय गणित दिवस : २२ दिसम्बर रामानुजम् जयंती

अनूठी सूझ

– सुधा दुबे

श्रीनिवास रामानुजम् विद्यालय में बहुत चहल-पहल थी अध्यापक और बड़े बच्चे व्यवस्था करते हुए यहाँ वहाँ घूम रहे थे शाला के मुख्य द्वार पर वार्षिक उत्सव का बैनर लगा था नाम के अनुरूप विद्यालय में २० से २२ दिसम्बर तक रामानुजम् जयंती पर बाल गणित मेले का आयोजन किया जाता रहा है। आज बच्चों ने विभिन्न प्रकार की दुकानें लगाई थीं। कहीं चाट पकौड़ी, कहीं गुब्बारे और कहीं पानी पुरी सजी हुई थीं। तीन दिवसीय आयोजन में कल खेलकूद प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थी। कल फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता होने वाली थी।

कन्हैया पाँचवी कक्षा का छात्र था। उसकी माँ का इकलौता पुत्र, पिता की मृत्यु कोरोना से हो गई थी माँ हायर सेकेंडरी उत्तीर्ण थी घर का खर्च वह कपड़े सिलकर निकालती थी। कन्हैया पढ़ने में सबसे आगे और खेलकूद में भी १०० मीटर और ४०० मीटर की बाधा दौड़ में प्रथम आया था। उसका मन प्रफुल्लित था पर वह कल के लिए बहुत चिंतित था। पिता के न रहने के कारण वह गत वर्ष भी फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में आर्थिक स्थिति के कारण भाग नहीं ले सका था।

सभी सहपाठी मित्र अपनी-अपनी पोशाख खरीद चुके थे। कोई सिपाही, कोई राजेन्द्र प्रसाद जी की अचकन पाजामा, किसी ने सुभाषचन्द्र बोस की पोशाक, कई छात्रों ने शक्तिमान की और किसी ने स्पाइडर-मैन की पोशाख खरीदी थी। छात्राओं ने इंदिरा गाँधी, किरण बेदी, कल्पना चावला की ड्रेस की चर्चा हो रही थी। उसके पास तो कोई नई ड्रेस खरीदने के पैसे नहीं थे। वह दुखी मन से सबकी चर्चा सुन रहा था। उदास मन से घर पहुँचा।

माँ उसका लटका हुआ चेहरा देखकर बोली...

''क्या बात है आज मेरे राजा बेटे का मुँह क्यों लटका हुआ है?''

''माँ! कल मेरे विद्यालय में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता है पर मेरे पास तो कोई भी अच्छी पोशाख नहीं है।''

''कोई बात नहीं बेटा! आज सिलाई के कपड़े देकर आऊँगी तुम्हारे लिए एक अच्छी सी पोशाख खरीद कर दे दूँगी।''

''नहीं माँ! मेरे लिए इतना खर्चा मत करो तुम दिन रात परिश्रम करती हो और सिलाई कर कपड़े सिलती हो।''

''मेरा प्यारा बेटा! मेरी कितनी चिंता करता है। बेटा कान्हा!... मैं ऐसा करती हूँ कि 'आम के आम और गुठलियों के दाम' मिल जाएँ।''

''अम्मा! तुम ऐसा क्या करोगी? पहेलियाँ क्यों बुझा रही हो, मुझे बताओ ना... क्या मैं कल फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग ले सकता हूँ?''

''हाँ बेटा! तुम चिंता मत करो तुम कल प्रतियोगिता में अवश्य भाग लोगे।''

''सचमुच अम्मा! तुम कितनी अच्छी हो बिलकुल यशोदा माँ जैसी।'' माँ ने उसे गले से लगा लिया। कन्हैया को अपनी माँ पर पूर्ण विश्वास था वह निश्चित होकर खुशी–खुशी सो गया।

माँ ने उसके सो जाने के बाद कपड़े की सिलाई से बचे टुकड़ों को इकट्ठा किया और कुछ अलग करने की सोची। वह भी हायर सेकेंडरी उत्तीर्ण थी। उसने कपड़ों की कतरन को विभिन्न ज्यामितिक आकार में काटकर उन्हें वर्ग, त्रिभुज, आयताकार, शंकु, गोलाकार, षटकोण, रेखा आदि का आकार दिया और उनसे सुंदर कुर्ता–पाजामा कन्हैया के नाप का सिल दिया। उस पर गणितज्ञ रामानुजम् का चित्र जो एक बैनर में छपा था सिल कर लगा दिया। रात भर के परिश्रम के बाद वह निश्चिंत होकर सो गई।

सुबह कन्हैया जब सो कर उठा तो वह माँ के गले लगकर बोला– ''माँ! बताओ ना आपने मेरे लिए कौन–सी पोशाख तैयार की है।''

माँ ने उसे पोशाख दिखाई उस कतरन से बनी आड़ी–टेढ़े टुकड़ों को देखकर पहले तो उसका मुँह लटक गया की माँ ने क्या चिंदियों को जोड़कर पोशाख बना दी पर माँ ने जब उसके बारे में समझाया तो वह खुशी से झूम उठा। पाँचवी कक्षा तक इतना गणित तो वह भी पढ़ चुका था।

जल्दी से उसने मंजन कर दूध पिया और नहाकर भोजन किया। अपनी शाला की गणवेश पहनी अपनी पोशाख को बस्ते में रखकर विद्यालय ले गया।

शाला में उसके सभी मित्र विभिन्न प्रकार की पोशाख पहनकर खुशी से सभी को आपस में दिखा रहे थे प्रतियोगिता शुरू होने में अभी समय था सब बच्चे शाला के हॉल में व्यवस्थित बैठ गए तब कन्हैया खाली कमरे में गया और उसने अपना ज्यामितीय आकृति वाला कुर्ता पाजामा पहन लिया।

सभी मित्र सहपाठी मंच पर अपना नाम लेने पर जाकर अपनी पोशाख प्रदर्शित कर रहे थे और उस पोशाख की विशेषता भी बता रहे थे। कोई शक्तिमान जैसे शक्ति दिखा रहा था और कोई स्पाइडर–मैन बना उछल–कूद कर रहा था।

कुछ छात्राएँ महारानी लक्ष्मीबाई बन तलवार चला रही थी तो कुछ दुल्हन का वेश पहनकर नृत्य भी दिखा रही थी। जब कन्हैया का नाम आया तब सभी उत्सुकता से उसको खोजने लगे जैसे ही कन्हैया मंच पर आया उसकी ड्रेस को देखकर सब बच्चे उसे चिढ़ाते हुए हँसने लगे। उसने अपनी पोशाख को बिना डरे सबके सामने मंच पर प्रदर्शित किया गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम् का नाम लिया और बोला हमारी शाला का नाम भी श्रीनिवास रामानुजम् के नाम पर है आज उनका जन्मदिन है मैंने इस पोशाख पर गणित की आकृतियाँ... यह त्रिभुज है तीन भुजाओं से घिरा हुआ, यह आयत है चार भुजाएँ हैं, परंतु आमने सामने की भुजा समान है, और यह वर्ग है चारों भुजाएँ समान है, यह रेखा है और यह अंडाकार आकृति है, यह वृत्त है, सभी ज्यामितीय आकृतियाँ हैं। उसकी आत्मविश्वास से भरी हुई आवाज ने सबको

सम्मोहित कर लिया था।

सभी गुरुजनों ने उसके उद्‌बोधन को सुनकर जोरदार तालियाँ बजाई उसके सहपाठी उन तालियों की आवाज को सुनकर सिर झुकाकर बैठ गए। अब उन्हें कन्हैया का वेश पूरा ब्लैक बोर्ड लग रहा था और लग रहा था कि जैसे गुरुजी ज्यामिति पढ़ा रहे हो। तालियों की गड़गड़ाहट के साथ कन्हैया मंच से नीचे उतरकर आ गया था दर्शकों के बीच उसकी माँ भी गर्व से सिर ऊँचा किए बैठी थीं।

प्रतियोगिता का परिणाम प्रतियोगिता समाप्त करने पर घोषित किया गया। सभी की महँगी-महँगी पोशाखें धरी रह गईं ना पुलिस की पोशाख, ना ही अचकन पाजामा और ना वेस्टर्न ड्रेस, लड़कियों की पोशाखों में कल्पना चावला की अंतरिक्ष पोशाख तृतीय रही और मिलिट्री की वर्दी द्वितीय रही। कबाड़ से जुगाड़ कर बनाया हुआ पाजामा कुर्ता जो कन्हैया की शोभा बढ़ा रहा था ज्यामिती आकृति को प्रथम स्थान प्रदान किया गया था।

पुरस्कार पाकर कन्हैया फूला नहीं समा रहा था, सभी गुरुजनों ने उसे ५०० रुपये का पुरस्कार अलग से दिया, पुरस्कार पाकर वह दौड़कर अम्मा के पास गया और पैर छूकर उनके गले लग गया और बोला.... ''माँ तुम सच्ची गुरु हो!'' माँ की आँखों में झर-झर आँसू बह रहे थे।

कन्हैया समझ गया था पुरस्कार धन से नहीं खरीदा जा सकता बुद्धिमत्ता और योग्यता से जिंदगी का कठिन समय भी विजय प्राप्त करवा सकता है। बस मन में कुछ करने की इच्छा होनी चाहिए जहाँ चाह वहाँ राह भी निकल आती है।

- भोपाल (म. प्र.)

मेजर भूकांत मिश्रा

घटना उस समय की है जब पंजाब में आतंकवादी गतिविधियाँ इतनी बढ़ चुकी थीं कि एक दिन तो आतंकवादियों ने अमृतसर स्थित पवित्र स्वर्ण मंदिर पर ही कब्जा कर लिया था। तब तत्कालीन भारत सरकार ने 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' चलाया। वह ६ जून १९८४ का दिन था मेजर भूकांत मिश्रा को स्वर्णमंदिर को आतंकवादियों से मुक्त करवाने का दायित्व सौंपा गया।

इसके पूर्व एक प्रयास में कई लोग हताहत हो चुके थे और स्वर्णमंदिर की पवित्रता की रक्षा भी एक महत्वपूर्ण तथ्य था ही। प्रात: ४.३० बजे। मेजर भूकांत की कंपनी बख्तरबंद गाड़ी की ओट में आगे बढ़ीं। आतंकवादी सामान्य नहीं टैंक भेदी बन्दूकों से गोलियाँ दाग रहे थे। अग्रिम टुकड़ी के जे.सी.ओ. सहित ८ सैनिक मारे गए। अपने पीछे टुकड़ी को आने के आदेश के साथ मेजर भूकांत मिश्रा आगे बढ़ चले।

एक घंटे में ही दो और टुकड़ियाँ उनसे आ मिली थीं। दीवार के एक छेद से लाइट मशीनगन उनका रास्ता रोक रही थी। मेजर रेंगते हुए उस गोली चालक के पास जा पहुँचे और उस पर हथगोला दाग दिया और उसे खामोश कर सीढ़ियों की ओर बढ़े

मीडियम मशीनगनों की बौछारों ने उन्हें सदैव के लिए सुला दिया। वे वीरगति को प्राप्त हुए।

अद्‌भुत शौर्य व साहस की मिसाल बन चुके इस योद्धा को भारत सरकार ने 'अशोकचक्र' से सम्मानित किया।

अनोखी मांग

चित्रकथा: देवांशु वत्स

SURYA

भारत के साथ
– प्रगति के पथ पर –
अग्रसर

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी है। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY

CONSUMER LIGHTING | PROFESSIONAL LIGHTING | APPLIANCES | FANS | PVC PIPES | STEEL PIPES

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | Tel.: +91-1147108000

Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting | /surya_roshni

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

सामान्य नियम:-

* एक प्रतियोगिता/पुरस्कार के लिए एक ही प्रविष्टि भेजें।
* प्रविष्टि के ऊपर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम एवं अंत में अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाईल नं. एवं रचना का स्वरचित होने का प्रमाण-पत्र अवश्य दीजिए।
* रचनाएँ हिन्दी में हों। हस्तलिखित रचनाएँ डाक से ही 'देवपुत्र' ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म.प्र.) पर भेजें। टाईप की हुई रचनाएँ इस मेल editordevputra@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। हस्तलिखित रचना का फोटो खींचकर मेल न करें।
* प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०२४ है।
* निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।
* सभी रचनाओं का प्रकाशन अधिकार 'देवपुत्र' का होगा।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२३

यह प्रतियोगिता **'देवपुत्र'** के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की स्मृति में आयोजित है। प्रतियोगिता केवल बच्चों के लिए है। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी स्वयं की बनाई बाल कहानी भेज सकते हैं।

पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	११००/-	१०००/-	५००/-५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित इस वर्ष यह पुरस्कार जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल उपन्यास की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कृत कृति को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी। प्रविष्टि हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित यह पुरस्कार इस वर्ष **'छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन प्रसंग पर आधारित एकांकी'** के लिए निश्चित किया है। पुरस्कार होंगे-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	१२००/-	१०००/-	५००/-५००/-

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा उनके पूज्य माता-पिता की स्मृति में स्थापित 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३' देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित बाल साहित्य की किसी एक श्रेष्ठ कृति पर प्रदान किया जाता है। जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ तक प्रकाशित पुस्तक का चयन कर निर्णायक द्वारा घोषित किया जाएगा।

झण्डा दिवस ७ दिसम्बर

सशस्त्र सेना झण्डा दिवस

वर्ष १९४९ से प्रतिवर्ष सात दिसम्बर को भारत में सशस्त्र सेना झण्डा दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य सैनिकों के लिए जन सामान्य से धन संग्रह करना है।

झण्डा दिवस पर लाल गहरा नीले और हल्का नीले रंग की पट्टिकाओं वाला एक प्रतीकात्मक झण्डा वितरित कर सहयोग राशि जुटाई जाती है। ये रंग तीनों सेनाओं के प्रतीक हैं।

वास्तव में सेना सीमाओं पर ढाल बनकर प्रतिफल सतर्कता से हमारी रक्षा करती है तभी हम करोड़ों देशवासी अपने-अपने काम निर्भय होकर कर पाते हैं। सैनिकों का ऋण हम किसी भी प्रकार नहीं उतार सकते। झण्डा दिवस पर हमारी थोड़ी सी आर्थिक सहायता एक प्रकार से उनके प्रति हमारी श्रद्धा का ही प्रकटीकरण है।

सीमा रक्षा के लिए प्राण करे बलिदान।
झण्डा दिवस है उन सभी वीरों का सम्मान।।

प्रिय भाई माहेश्वरी जी!

'देवपुत्र' का पूरा अंक पढ़ गया हूँ और आनंद विभोर हूँ। जितनी सुंदर रचनाएँ उतनी ही सुंदर और मोहक प्रस्तुति। इसके पीछे आपका कितना श्रम है, मैं समझ सकता हूँ।

२५ वर्षों तक हिंदुस्तान टाइम्स की लोकप्रिय बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़ा रहा। उसके बाद भी सारा जीवन संपादन करते ही गुजरा। इसलिए अच्छी तरह समझ सकता हूँ, कि 'देवपुत्र' के हर अंक को मोहक ढंग से सजाने, संवारने में आप कितना श्रम करते हैं।

मेरी कविता आपने इतने सुंदर ढंग से दी कि क्या कहूँ। कुछ कहते नहीं बनता।

मेरा बहुत-बहुत स्नेह और साधुवाद।

- प्रकाश मनु, फरीदाबाद (हरियाणा)

पुण्यश्लोका अहिल्यादेवी पर 'देवपुत्र' का यह अंक (सितम्बर २०२३) अति सुंदर बन पड़ा है। चित्रांकन अत्यंत आकर्षक है।

अहिल्यादेवी का समग्र जीवन वृत्त चित्रों के साथ जीवंत हो उठा है।

''भक्ति, मुक्ति, शक्ति, युक्ति, न्याय, नीति, साधिका, मालवा की राजरानी मातृ-भू आराधिका।''

इन पंक्तियों में ही तो अहिल्या देवी का सम्पूर्ण परिचय परिलक्षित होता है।

भारत-भू पर जन्मी ऐसी विभूतियाँ सबके लिए प्रेरणा स्रोत हैं, हम नतमस्तक हैं उनके आगे।

'देवपुत्र' का यह अद्‌भुत अंक प्रकाशित करने के लिए 'देवपुत्र' परिवार का अभिनंदन।

- पद्मा चौगांवकर, गंज बासौदा (म. प्र.)

रवि लायट्ट का विस्मयकारी भारत

दशहरा भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है। बुराई पर अच्छाई की जीत को रावण दहन के साथ एक प्रतीकात्मक रूप में दर्शाता यह त्योहार देश भर में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है परन्तु आश्चर्य की बात यह कि इसी देश में कुछ ऐसे स्थल भी हैं जहां महाज्ञानी लंकापति रावण के न केवल मन्दिर स्थापित हैं वरन दशहरे पर दशानन के पुतले को जलाया जाना अपमानजनक माना जाता है और ये स्थल हैं : रावण रुंडी, मंदसौर व रावण ग्राम, विदिशा (म.प्र.), काकीनाडा (आ.प्र.), जोधपुर (राज.), बिसरख (उ.प्र.), कांगड़ा (हि.प्र.), गढ़ चिरौली (महा.) आदि।

मैनपाट का बिसर पानी नामक गांव छत्तीसगढ़ के सरगुजा में प्रकृति के एक अनोखे उपहार के रूप में मौजूद है। देखकर आश्चर्य होता है कि यहां पानी ऊपर से नीचे नहीं बल्कि विपरीत दिशा में यानि नीचे से ऊपर की ओर बहता है इसीलिए तो इसे उल्टा पानी का नाम भी दे दिया गया है। इतना ही नहीं, यहां गाड़ियां भी ढलान की ओर न लुढ़ककर, ऊंचाई की ओर स्वतः चढ़ती जाती हैं।

ग्वालियर (म.प्र.) में जय विलास महल के दरबार हॉल में झाड़फ़ानूस का एक ऐसा शानदार जोड़ा अपनी आभा बिखेर रहा है जिसमें प्रत्येक की लम्बाई 12.5 मी. और वज़न 3.5 टन है। कहा जाता है कि महल की छत इतने वज़न को सम्भाल पायेगी या नहीं, इस बात का परीक्षण करने के लिए पहले आठ हाथियों को इससे लटकाकर देखा गया था।

सिने जगत में पांच हज़ार से ऊपर गाने रिकॉर्ड करने वाले, स्वर्ण आभूषणों के शौक़ीन बप्पी लाहिड़ी के नाम से प्रसिद्ध अलोकेश लाहिड़ी ने 1986 में पूरे एक वर्ष के दौरान मात्र 34 वर्ष की आयु में 33 फ़िल्मों के लिए 180 गानों की रिकॉर्डिंग पूरी करने के साथ गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज करा लिया था।

© gyashm@gmail.com / 8077554501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/११/२०२३ | प्रेषण तिथि ३०/११/२०२३ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना